संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-23 अंक- 61
पृष्ठ 8
बुधवार
18 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बच्चे की है पहली ठंड...

विचार- वैश्विक राजनीति में बड़े बदलाव...

खेल- धोनी ने आईपीएल से भी लिया...

हमारे पास सामर्थ्य भी और संकल्प भी

आसियान समिट में बोले पीएम मोदी, अस्थिरता खत्म करने पर भी दिया जोर

मनीला, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आसियान–भारत शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों में दुनिया ने लगातार कई संकटों का सामना किया है। आज दुनिया को सबसे ज्यादा शांति, स्थिरता और भरोसेमंद माहौल की जरूरत है। ऐसे में इस वर्ष की थीम श्हम सब मिलकर अपने भविष्य की राह तय करेंश विशेष महत्व रखती है। आने वाले वर्षों में आसियान कम्युनिटी विजन 2045 और विकसित भारत 2047 हमारी साझा आकांक्षाओं को पूरा करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा ष्हमारे पास सामर्थ्य भी है और संकल्प भी जिससे हम आपसी भागीदारी को नई दिशा दे सकते हैं।ष हमारा मानना है कि भारत का विकास और आसियान की समृद्धि एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि पिछले 12 वर्षों में हमने अपनी साझेदारी को नई गति दी है। अब हमें मिलकर अपने क्षेत्र के भविष्य के लिए नई दिशा तय करनी होगी। आसियान की एकता और इस साझेदारी में उसकी केंद्रीय भूमिका के प्रति भारत की प्रतिबद्धता अटूट है और आगे भी बनी रहेगी। मुझे विश्वास है कि आज की यह बैठक हमारी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी और एक सुरक्षित, समावेशी तथा समृद्ध हिंद–प्रशांत क्षेत्र के निर्माण में योगदान देगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत की एक्ट ईस्ट नीति ने भारत–आसियान संबंधों को नई गति और गहराई दी है। हमारी साझेदारी अब साझा संस्कृति और विरासत से आगे बढ़कर डिजिटल, रक्षा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी नए आयाम हासिल कर चुकी है। वर्ष 2014 से अब तक लोगों के बीच संपर्क मजबूत करने के लिए 100 से अधिक पहल की गई हैं, करीब 250 क्विक इंपैक्ट प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं और कौशल विकास के लिए 10 हजार से अधिक छात्रवृत्तियां दी गई हैं। आज भारत और आसियान के नौ देशों के बीच सीधी उड़ानें और बढ़ता पर्यटन हमारे मजबूत संबंधों का प्रमाण हैं।



दुनिया को आज सबसे ज्यादा शांति, स्थिरता और भरोसेमंद माहौल की जरूरत है। हमारे पास सामर्थ्य भी है और संकल्प भी। भारत का विकास और आसियान की समृद्धि एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। हमें मिलकर अपने क्षेत्र के भविष्य की नई दिशा तय करनी है।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत के इस समूह (क्वाड) की ये बैठक डोनाल्ड ट्रंप के लिए पहली होगी। ये बैठक इस समूह के पिछले सम्मेलन के दो साल बाद हो रही है, जिसे उनके पूर्ववर्ती जो बाइडेन अपनी विदेश नीति की एक बड़ी उपलब्धि मानते थे।

उत्तराखंड में बड़ा हादसा:

टिहरी गढ़वाल के गूलर में पुल से गिरी बस, नौ की मौत, 27 घायल

टिहरी, एजेंसी। टिहरी जिले में गूलर घाटी के पास आज सुबह हुए बस हादसे में नौ लोगों की जान चली गई, जबकि 27 लोग घायल हो गए। घायलों में से भी छह की हालत गंभीर बनी हुई है। बस हरिद्वार से चमोली कर्णप्रयाग जा रही थी। हादसे के बाद एसडीआरएफ, पुलिस और स्थानीय लोगों ने मिलकर राहत एवं बचाव अभियान चलाया। आज मंगलवार 17 नवंबर को सुबह करीब 4:30 बजे यात्री बस गूलर बाजार के पास अनियंत्रित होकर गूलर पुल से करीब 100 मीटर नीचे गदेरे में जा गिरी। सूचना मिलते ही एसडीआरएफ की ब्यासी पोस्ट से उपनिरीक्षक सावर सिंह के नेतृत्व में टीम मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया। हादसे की गंभीरता को देखते हुए ढालवाला और एसडीआरएफ वाहिनी मुख्यालय से भी अतिरिक्त टीमें भेजी गईं।



हरिद्वार में 11 महीने की बच्ची से दुष्कर्म का आरोपी सौरभ पुलिस गिरफ्त में

हरिद्वार, एजेंसी। उत्तराखंड के हरिद्वार में कथित रूप से 11 माह की बच्ची से दुष्कर्म करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। हरिद्वार के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) नवनीत सिंह भुल्लर ने बताया कि आरोपी सौरभ को बाल्मीकि चौक के पास से सोमवार रात गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि उसके खिलाफ आगे



की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। हरिद्वार में सिडकुल क्षेत्र की एक निजी फैक्ट्री में काम करने वाला सौरभ बिहार के भागलपुर का रहने वाला है।

भुल्लर ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी के खिलाफ पॉक्सो अधिनियम में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू की गयी है। उन्होंने यह भी कहा कि आरोपी की मेडिकल जांच करायी जा रही है। उधर, 15 नवंबर की रात हुई घटना के बाद गंभीर हालत में अस्पताल में उपचार के लिए ले जायी गयी बच्ची की मेडिकल जांच में उसके साथ दुष्कर्म के प्रयास की पुष्टि हुई हुई है।

हालत बिगड़ने पर उसे हरिद्वार जिला चिकित्सालय ले जाया गया था जहां से उसे ऋषिकेश स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) रेफर कर दिया गया था। चिकित्सकों ने बताया कि बच्ची की हालत फिलहाल स्थिर बनी हुई है। कोतवाली प्रभारी कुंदन सिंह राणा ने बताया कि आरोपी युवक सौरभ रोती हुई बच्ची को चुप कराने के बहाने से अपने कमरे में ले गया और उसके साथ कथित तौर पर दुष्कर्म किया।

अभिषेक बनर्जी पर कलकत्ता हाईकोर्ट सख्त

आपत्तिजनक बयानों पर आपराधिक अवमानना का नोटिस

कोलकाता, एजेंसी। कलकत्ता हाईकोर्ट ने मंगलवार को तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद अभिषेक बनर्जी के खिलाफ आपराधिक अवमानना की कार्रवाई शुरू करते हुए कारण बताओ नोटिस जारी करने का आदेश दिया। जस्टिस कृष्णा राव ने कहा कि अदालत ने अभिषेक बनर्जी के बयानों और सात नवंबर को किए गए सोशल मीडिया पोस्ट की पूरी सामग्री देखी है। इसके आधार पर अदालत का मानना है कि उन्होंने प्रथम दृष्टया आपराधिक अवमानना की है। कोर्ट ने



कहा कि उनका फेसबुक पोस्ट न्यायिक प्रक्रिया में दखल देने वाला है। अब अभिषेक बनर्जी को नोटिस जारी होने के 15 दिनों के भीतर जवाब देना होगा कि उनके खिलाफ उचित सजा क्यों न दी जाए। इस मामले की अगली सुनवाई आठ दिसंबर को होगी। दरअसल, सात नवंबर को अभिषेक बनर्जी ने आरोप लगाया था कि कोलकाता स्थित उनके आवास पर भाजपा के गुंडों ने हमला किया। इस घटना के बाद टीएमसी और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प भी हुई थी। अभिषेक ने इसे पिछले छह महीनों में उनकी जान लेने की सातवीं कोशिश बताया था। इस घटना और अपनी सुरक्षा को लेकर उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था। इसी पोस्ट और उनके बयानों को लेकर हाईकोर्ट ने आपराधिक अवमानना की कार्यवाही शुरू की है। अवमानना नोटिस के अलावा हाईकोर्ट ने अभिषेक बनर्जी की सुरक्षा से जुड़ी याचिका पर भी अहम आदेश दिया है।

आमंत्रण पत्र

सम्मान समारोह एवं काव्य गोष्ठी

दिनाँक - 20 नवम्बर 2026 दिन - शुक्रवार
समय - अपराह्न 2 बजे से



श्री अशोक कुमार स्नेही सम्मान

मुख्य अतिथि
प्रो0 रवि कुमार

अध्यक्ष
मारुफ शायर अनवर अब्बास

विशिष्ट अतिथि
डा0 प्रदीप चित्राँशी

संचालन - श्री उमेश श्रीवास्तव (दैनिक/साप्ताहिक)
आयोजन - स्नेही काव्य मंच-प्रयागराज
अध्यक्ष - मनीष कुमार
साहित्यिक संयोजक - अलका श्रीवास्तव
कार्यक्रम संयोजक - अलका श्रीवास्तव, मनीष कुमार
स्थान - हिन्दुस्तान एकेडमी (गांधी सभागार) प्रयागराज

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

PRESS
हमेशा आपके साथ

शहर समता NEWS

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

किसानों पर दर्ज एफआईआर के खिलाफ सौंपा ज्ञापन

प्रयागराज। भारतीय किसान यूनियन लोकशक्ति ने मुरादाबाद के नियामतपुर इकॉनमिक टोल प्लाजा पर किसानों पर दर्ज एफआईआर के खिलाफ एसडीएम ठाकुर प्रसाद को मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। संगठन ने पुलिस व टोल प्लाजा



की मिलीभगत से दर्ज एफआईआर तत्काल वापस लेने और संबंधित लोगों पर कार्रवाई की मांग की। मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्यौराज सिंह, ललन सिंह पटेल, अरुण कुमार मौर्य, बबलू शुक्ला, सफात अली शाह, यादवेंद्र अहीर, अर्जुन सिंह, बबलू पटेल और अवधेश कुमार आदि रहे।

चार्टर्ड प्लेन से प्रयागराज पहुंचे आचार्य धीरेंद्र शास्त्री, एयरपोर्ट पर हुआ स्वागत

प्रयागराज। प्रतापगढ़ के कुंडा में 17 नवंबर से शुरू होने जा रही बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की श्रीराम कथा से पहले सियासत और अध्यात्म का अनूठा संगम देखने को मिला है। दिल्ली से चार्टर्ड प्लेन से प्रयागराज एयरपोर्ट पहुंचे धीरेंद्र शास्त्री का स्वागत करने खुद कथा के आयोजक एवं कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह 'राजा भैया' पहुंचे। प्रयागराज एयरपोर्ट पर स्वागत के बाद खास नजारा देखने को मिला, जब राजा भैया खुद गाड़ी की ड्राइवर सीट पर बैठे और अपनी कार से धीरेंद्र शास्त्री को लेकर कुंडा के लिए रवाना हुए। श्रीराम कथा को लेकर क्षेत्र के संतों, श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों में उत्साह देखा जा रहा है। एयरपोर्ट पर बाबा बागेश्वर के साथ हनुमान गढ़ी अयोध्या के महंत राजू दास भी थे। इस अवसर पर भाजपा नेता अशोक सिंह शामिल रहे।

कथा के श्रवण से हर कष्ट होते हैं दूरः आचार्य

प्रयागराज। समोगरा में सोमवार को कलश यात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। इस दौरान बिजौरा गंगा घाट से जल लेकर श्रद्धालु कथा स्थल पर पहुंचे। इस दौरान गाजे–बाजे के साथ श्रद्धालु श्री कृष्ण के जयकारे लगा रहे थे। कलश यात्रा का नेतृत्व कथा वाचक आचार्य गौरव कर रहे थे। कथा वाचक ने कहा कि कथा के श्रवण से हर कष्ट दूर हो जाते हैं। इसलिए हर किसी को कथा का श्रवण करना चाहिए। मौके पर कृष्ण कुमार दुबे, संत कुमार दुबे, मूलचन्द्र, वीरेंद्र कुमार, मनोज दुबे, संजय, नीरज, प्रदीप, दिलीप आदि रहे।

फूलपुर में एक रात में पांच जगह चोरी

प्रयागराज। क्षेत्र के प्रतापपुर बाजार में चोरों ने एक ही रात में पांच ठिकानों को निशाना बनाया। चोरों ने तीन दुकानों और एक मकान के दो किराये के कमरों से करीब 4.42 लाख रुपये का माल समेट लिया। चोरी की यह पूरी वारदात पास में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। रविवार सुबह घटना की जानकारी होने पर बाजार में हड़कंप मच गया। चोरों ने पहले आनंद मौर्या की मौर्या इलेक्ट्रॉनिक दुकान से 25 हजार रुपये नकद चुराए। इसके बाद चंदन गारमेंट से 23 हजार रुपये नकद पार किए। सत्या मोबाइल शॉप से दो कीपैड और पांच एंड्रॉयड फोन (करीब 50 हजार रुपये) तथा दो हजार रुपये नकद चोरी हुए। दुकानों के बाद चोरों ने रविंद्र सिंह के मकान को निशाना बनाया। यहां एएनएम पुष्पा पटेल के कमरे से 35 हजार रुपये नकद और करीब 2.60 लाख रुपये के आभूषण चोरी हुए। अयांशी कॉस्मेटिक की संचालिका रेखा पटेल के कमरे से 55 हजार रुपये नकद, 25 हजार रुपये की चांदी की पायल और 30 हजार रुपये की सोने की अंगूठी चुराई गई। रविवार सुबह घटना की जानकारी होने पर बाजार में भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची फूलपुर पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की पहचान करने में जुटी है। इंस्पेक्टर फूलपुर शेषनाथ पाल ने बताया कि तहरीर मिलते ही रिपोर्ट दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। व्यापारियों ने बाजार में रात्रि गश्त बढ़ाने और जल्द से जल्द चोरी की घटनाओं का खुलासा करने की मांग की है।

घर का ताला तोड़कर जेवर और नकदी चोरी

ग्राम पंचायत पिपरांव में एक सूने घर का ताला तोड़कर चोर लाखों रुपये के जेवरात, घरेलू सामान और इनवर्टर ले गए। पिपरांव निवासी खुशनुमा सोमवार सुबह मायके से लौटने पर चोरी का पता चला। उसने बारा पुलिस को शिकायत दी है, जो मामले की जांच कर रही है।

खेलते–खेलते कुएं में गिरा मासूम, गई जान

प्रयागराज। कोतवाली क्षेत्र के ढोकरी गांव में एक दुखद घटना हुई। सोमवार शाम गेंद खेलते समय सात वर्षीय अनिरुद्ध कुशवाहा (7) कुएं में गिर गया। डूबने से उसकी मौत हो गई, जिससे परिवार में कोहराम मच गया। अनिरुद्ध कुशवाहा ढोकरी गांव निवासी धर्मेंद्र कुशवाहा का बेटा था। वह गांव के एक कॉन्वेंट स्कूल में कक्षा दो का छात्र था। सोमवार शाम करीब पांच बजे वह घर के पास अन्य बच्चों के साथ खेल रहा था। खेलते–खेलते वह पास में स्थित कुएं में जा गिरा।

घटना की जानकारी मिलते ही परिजन और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। सूचना पर डायल 112 की पुलिस टीम, एंबुलेंस और फूलपुर पुलिस भी पहुंची। फूलपुर इंस्पेक्टर शेष नाथ पाल ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अनिरुद्ध अपने माता–पिता का छोटा बेटा था। वह दो भाइयों में सबसे छोटा होने के कारण पूरे परिवार का लाडला था। बड़ा भाई आरव और माता–पिता उससे बहुत स्नेह करते थे। पिता धर्मेंद्र कुशवाहा खेती–बाड़ी करते हैं, जबकि मां ढोकरी तिराहे पर ब्यूटी पार्लर चलाती हैं। परिवार को अनिरुद्ध से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन इस हादसे ने खुशियां छीन लीं।

PUBLIC NOTICE

I, Ravi Shanker Rai, Father of Master Advik Rai who is Student of St. Joseph's College, Prayagraj declare that my name has been recorded incorrectly in the record of St. Joseph's College, Prayagraj as "RAVI SHANKAR RAI".
The correct name of deponent is 'RAVI SHANKER RAI", R/o. Flat No. A-33, High Court Residential Complex, Chauphatka, Prayagraj.

- Ravi Shanker Rai

आजम खां की अजह्न पर हाईकोर्ट ने सुरक्षित रखा फैसला, ईडी की गिरफ्तारी और न्यायिक हिरासत को दी है चुनौती

प्रयागराज। आजम खां की अर्जी पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा है। सपा नेता ने ईडी की गिरफ्तारी और न्यायिक हिरासत को चुनौती दी है। जौहर ट्रस्ट से जुड़े 426 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सपा नेता गाजियाबाद की डासना जेल में बंद हैं।

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री आजम खां की याचिका पर मंगलवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट में अहम सुनवाई हुई। न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता और न्यायमूर्ति देवेंद्र सिंह प्रथम की खंडपीठ ने आजम खां की ओर से दाखिल याचिका और अंतरिम राहत की अर्जी पर दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित कर लिया है। अब यह देखना होगा कि अदालत आजम खां को अंतरिम राहत देती है या नहीं।

आजम खां ने जौहर ट्रस्ट से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से की गई गिरफ्तारी और न्यायिक हिरासत को चुनौती दी है। यह मामला जौहर यूनिवर्सिटी से जुड़े करीब 426 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग आरोपों से संबंधित है।

आजम खां को 31 अक्तूबर को जेल से रिहा होने के बाद ईडी ने गिरफ्तार कर लिया था। आजम खां की याचिका पहले सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई थी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर इसे इलाहाबाद हाईकोर्ट स्थानांतरित किया गया था।



इसके बाद मामले को मंगलवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया। आजम खां की ओर से गिरफ्तारी को अवैध बताते हुए राहत की मांग की गई है, जबकि ईडी ने अपनी कार्रवाई का बचाव किया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद खंडपीठ ने फैसला सुरक्षित कर लिया।

आजम को न्यायिक हिरासत में भेजा, 26 नवंबर को अगली सुनवाई

मौलाना मोहम्मद अली जौहर ट्रस्ट को मिले चंदे और रामपुर स्थित मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय के निर्माण में इस्तेमाल हुए फंड की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को पूर्व कैबिनेट मंत्री और सपा के वरिष्ठ नेता आजम खां को अदालत में पेश किया। ईडी की रिमांड अवधि पूरी होने के बाद अदालत ने उन्हें न्यायिक हिरासत में डासना जेल भेजने का आदेश दिया। मामले में अगली सुनवाई के लिए 26 नवंबर की तारीख तय की गई है।

ईडी ने आजम से तीन दिन तक पूछताछ की थी। इस दौरान जांच का मुख्य केंद्र मौलाना मोहम्मद अली जौहर ट्रस्ट को मिले चंदे और विश्वविद्यालय के विकास में खर्च की गई धनराशि रही। जांच एजेंसी यह पता लगाने में जुटी है कि ट्रस्ट को विभिन्न स्रोतों से कितनी धनराशि मिली और उसका इस्तेमाल किन कार्यों में किया गया। जांच के दौरान सहारनपुर में आजम खां के चार्टर्ड अकाउंटेंट से जुड़े ठिकानों पर की गई छापेमारी में मिले दस्तावेज को भी खंगाला गया। इनके आधार पर ट्रस्ट के बैंक खातों, वित्तीय लेनदेन और विश्वविद्यालय के निर्माण में खर्च हुई रकम से जुड़े सवाल पूछे गए। ईडी इन रिकॉर्ड के जरिए चंदे के स्रोत और उसके इस्तेमाल की कड़ियों को जोड़ने का प्रयास कर रही है।

31 अक्तूबर की शाम रामपुर जेल से बाहर आते ही ईडी ने आजम खां को हिरासत में ले लिया था। यह कार्रवाई रामपुर स्थित मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय के निर्माण में कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच के तहत की गई थी। इसी मामले में उनके बेटे अब्दुल्ला आजम को रिहा कर दिया गया था।

स्कूल के सामने ट्रेन की चपेट में आने से तीसरी के छात्र की मौत, भड़का आक्रोश

प्रयागराज। स्कूल पहुंचने में महज तीन मिनट की देरी और फिर एक दर्दनाक हादसा। घूरपुर के इरादतगंज में तीसरी कक्षा के नौ वर्षीय छात्र की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। घटना से गुस्साए परिजनों और अभिभावकों ने स्कूल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा किया। विद्यालय में पथराव और तोड़फोड़ से बच्चे सहम गए।

घूरपुर थाना क्षेत्र के इरादतगंज स्थित सेंट मेरी कॉलेज के सामने मंगलवार सुबह दर्दनाक हादसा हो गया। विद्यालय में पढ़ने वाले कक्षा तीन के नौ वर्षीय छात्र की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। छात्र की मौत की खबर मिलते ही विद्यालय और आसपास अफरा–तफरी मच गई। आक्रोशित परिजनों और अभिभावकों ने स्कूल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए विद्यालय में पथराव और तोड़फोड़ की। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थिति संभाली। घटना को लेकर अभिभावकों और स्थानीय लोगों में भारी रोष है।



मृतक की पहचान मोहम्मद यजदान (9) पुत्र मुस्तकीम आलम निवासी चक घनश्यामदास के रूप में हुई है। मुस्तकीम गांव में ही ईंट–भट्ठा चलाते हैं। यजदान तीन भाइयों में सबसे बड़ा था। परिजनों का आरोप है कि मंगलवार सुबह विद्यालय पहुंचने में महज तीन मिनट की देरी होने पर उसे गेट से ही लौटा दिया गया। इसके बाद वह अकेले घर जाने के लिए रेलवे ट्रैक पार कर रहा था। इसी दौरान खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई।

हादसे के बाद 26506 खजुराहो वंदे भारत एक्सप्रेस सुबह 8रू50 से 9रू05 बजे तक घटनास्थल पर खड़ी रही। इसके चलते पीछे से आ रही कई ट्रेनें प्रभावित हुईं। घटना की जानकारी मिलने पर छात्र के परिजन, अन्य अभिभावक और स्थानीय लोग विद्यालय पहुंच गए। उन्होंने स्कूल प्रबंधन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। पथराव और तोड़फोड़ के दौरान विद्यालय में मौजूद बच्चे सहम गए। बड़ी संख्या में पहुंची पुलिस ने लोगों को शांत कराकर स्थिति नियंत्रित की।

उदीयमान सूर्य को अर्घ्य, व्रतियों ने किया पारण

प्रयागराज। भोर की पहली किरण के इंतजार, लोकगीतों की गूंज, हाथों में पूजा का सूप और मन में परिवार की सुख–समृद्धि की कामना... छठ महापर्व के अंतिम दिन शहर के विभिन्न घाटों पर आस्था का दृश्य कुछ इस तरह नजर आया। चार दिनों तक चली छठी मैया की उपासना उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ पूरी हुई।

व्रतियों ने 36 घंटे तक निर्जला व्रत रख कर सूर्यदेव को अर्घ्य देते हुए पति की लंबी आयु, संतान के सुखी जीवन और परिवार की खुशहाली की कामना की और विधि–विधान से व्रत का पारण किया। सोमवार को संगम, अरैल, छतनाग, बलुआ घाट और दशाश्वमेध घाट सहित शहर के सभी प्रमुख घाटों पर भोर से ही व्रती महिलाओं के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया।

घाटों पर पूजा के दौरे में सजे फल–फूल और प्रसाद के साथ महिलाएं छठी मैया के पारंपरिक गीत गाती नजर आईं। सबसे पहले व्रतियों ने बेदी पर जल चढ़ाया, अक्षत छिड़के और सिंदूर लगाकर पूजा–अर्चना की। इसके बाद बेदी की परिक्रमा कर छठी मैया से परिवार के मंगल की कामना की।

पूजा सामग्री के साथ जल में खड़ी व्रतियों की निगाहें उगते सूर्य पर टिकी थीं। सूर्यदेव के दर्शन होते ही सूप और दौरा में रखे फल, फूल और प्रसाद के साथ अर्घ्य दिया गया। इस दौरान परंपरा के अनुसार दूध से दो बार और जल से तीन बार सूर्यदेव की उपासना की गई। अर्घ्य देने के बाद बेदी पर पूजा–अर्चना की रस्म निभाई गई। महिलाओं ने एक–दूसरे को सिंदूर लगाया और प्रसाद बांटकर पर्व की खुशियां साझा कीं।

लोकगीतों में मांगा अपनों के लिए आशीर्वाद

छठ पूजा के दौरान घाटों पर पारंपरिक लोकगीतों की गूंज बनी रही। व्रती महिलाएं 'उगा हो सूरज देव', 'केलवा के पात पर लचकत जाए' और 'कांच ही बांस के बहंगिया' जैसे लोकगीत गाती नजर आईं। व्रतियों ने गीतों में पति और बच्चों का नाम लेकर उनके मंगल जीवन की कामना करते हुए छठी मैया से पूरे परिवार की सुख–समृद्धि और खुशहाली का आशीर्वाद मांगा।

अदरक और गुड़ के साथ किया पारण

व्रत पूरा होने के बाद पारण की रस्म निभाई गई। व्रतियों ने सबसे पहले अदरक और गुड़ खाकर व्रत खोला। इसके बाद छठी मैया को चढ़ाया गया प्रसाद ग्रहण किया और परिवार के सदस्यों व परिचितों में वितरित किया।

बेदी की परिक्रमा कर मांगा छठी मैया का आशीष

अर्घ्य देने के बाद बेदी पूजा की परंपरा निभाई गई। व्रती महिलाओं ने बेदी की परिक्रमा की और साष्टांग प्रणाम कर छठी मैया से परिवार की सुख–समृद्धि और अपनों के मंगल जीवन का आशीर्वाद मांगा। इसके बाद एक–दूसरे को सिंदूर लगाकर प्रसाद वितरित किया।

महिलाओं से बातचीत

मुझे बचपन से ही छठ पर्व से लगाव रहा है। बुआ को व्रत करते देखकर मन में आस्था जगी और शादी के बाद 2020 से मैंने भी छठ व्रत रखना शुरू कर दिया। मैं हर साल छठ व्रत रखने के लिए प्रयागराज आती हूं। मेरा मानना है कि मेरे जीवन में जो भी अच्छा होता है, वह छठी मइया की कृपा से होता है। – रति श्रीवास्तव, अभिनेत्री

छठ व्रत में हर छोटी–बड़ी परंपरा का अपना महत्व है। अर्घ्य देते समय दूध और जल से सूर्य देव की पूजा करते हैं। इस पर्व में परिवार की सुख–समृद्धि और खुशहाली की कामना रहती है। पारण के दिन सबसे पहले अदरक और गुड़ खाकर व्रत खोलते हैं, फिर छठी मइया को चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण करते हैं। –शिवांगी पांडेय, व्रती

नए यमुना पुल से छलांग लगाकर युवक ने दी जान, साढ़े सात घंटे बाद मिला शव

प्रयागराज। नए यमुना पुल से सोमवार सुबह करीब दस बजे घूरपुर थाना क्षेत्र के छोटी कांटी गांव के विकास यादव (18) ने नैनी से शहर जाने वाले साइड से यमुना नदी में छलांग लगाकर खुदकुशी कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस नैनी थाना पुलिस ने गोताखोरों की मदद से उसका शव शाम करीब साढ़े पांच बजे बरामद किया। उसके पास से मिले आधार कार्ड व मोबाइल की मदद से पुलिस ने शव की शिनाख्त की और परिजनों को सूचना दी। इसके बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अब तक मिली जानकारी के मुताबिक बृजेश कुमार का पुत्र विकास इंटरमीडिएट का छात्र था। वह दो भाई और एक बहन में सबसे बड़ा था। नैनी थाना प्रभारी अविनाश सिंह ने बताया कि ऐसी आशंका जताई जा रही है कि घर में किसी बात पर विवाद के कारण युवक ने ऐसा कदम उठाया।

बिलखता रहा भाई, टकटकी लगाए नदी की ओर देखते रह गए लोग

बृजेश यादव के नदी में छलांग लगाता देख सभी राहगीर हैरत में पड़ गए। अंधेरा होने पर नैनी पुल के नीचे लोग अपने मोबाइल की टॉर्च जलाए खड़े रहे। सहायक पुलिस आयुक्त कुंजलता ने बताया कि गोताखोरों ने करीब साढ़े सात घंटे बाद उसे खोजकर नाव के जरिये नदी के किनारे पहुंचाया।

छठ के घाट पर बदली पीढ़ी, बहुओं ने संभाली सास की विरासत

प्रयागराज। घर के आंगन में गूंजते छठ के गीत, पूजा की तैयारियां, मां और सास पूरे नियम–निष्ठा से व्रत करते देखती आईं महिलाओं ने इस बार छठ की परंपरा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है। पहली बार व्रत रखने वारी इन महिलाओं ने इस बार पूजा की तैयारियों के साथ खुद व्रत की जिम्मेदारी संभाली है। किसी को मां ने यह परंपरा सौंपी तो किसी को सास ने व्रत रखने के लिए जिम्मेदारी दी। व्रतियों के मन में पहला व्रत रखने के उत्साह के साथ छठी मैया से जुड़ी अपनी–अपनी मनोकामनाएं भी हैं।

मेरी मां हर साल छठ का व्रत रखती थीं। बचपन से उन्हें पूजा करते देखती आई हूं। अब मम्मी ने यह जिम्मेदारी मुझे सौंप दी है। मेरी शादी को तीन साल हो गए हैं। इस बार पहली बार व्रत रखा है। बच्चे की मनोकामना के साथ छठी मैया की पूजा कर रही हूं। –माधुरी देवी, व्रती

मेरी शादी को तीन साल हो गए हैं। इस बार सासू मां ने मुझे छठ का व्रत रखने की जिम्मेदारी दी है। परिवार में सुख–समृद्धि बनी रहे और बच्चे की प्राप्ति हो, इसी कामना के साथ पहली बार व्रत रखी हूं। –पूनम साहू, व्रती

मेरी एक बेटी है। इस बार सासू मां ने मुझे छठ व्रत रखने की जिम्मेदारी दी है। पहली बार बेटे की मनोकामना के साथ छठी मैया का व्रत रखी हूं। व्रत रखने पर एक सकारात्मक उर्जा का एहसास हुआ। –दीपिका साहू, व्रती

मेरी शादी 2018 में हुई थी। मेरी एक बेटी है। अब तक घर में छठ पूजा होते देखती थी, लेकिन इस बार सासू मां ने मुझे व्रत की जिम्मेदारी सौंपी है। पहली बार छठ का व्रत रखकर बच्चे की मनोकामना कर रही हूं। –खुशी साहू, व्रती

डंपर की चपेट में आने से दो सगे भाइयों की मौत

प्रयागराज। परसरा गांव में शिव चर्चा से लौटते समय दो भाइयों की डंपर की टक्कर से मौत हो गई। उनकी मां शांति देवी इस हादसे में बाल–बाल बच गईं। पुलिस ने डंपर चालक को पकड़ लिया है और शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। धूमनगंज के पीपलगांव की निवासी शांति देवी (45) अपने बेटों प्रियांशु (18) और शिवांशु (3) के साथ परसरा गांव में शिव चर्चा में गई थीं। शिव चर्चा के दौरान उनका एक महिला से विवाद हो गया। विवाद से नाराज होकर शांति देवी वहां से पैदल ही जसरा के लिए चल पड़ीं। कुछ देर बाद उनके बड़े बेटे प्रियांशु ने छोटे भाई शिवांशु के साथ पचखरा गांव के पास मां को मनाया। वे तीनों बाइक से घर जाने के लिए निकले। पचखरा गांव में पहुंचते ही पीछे से आ रही एक डंपर ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में प्रियांशु और शिवांशु की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर घूरपुर और बारा पुलिस मौके पर पहुंची।

शांति देवी ने रोते हुए बताया कि उनके पति राकेश पीपलगांव में लाई और चना बेचने का काम करते हैं। प्रियांशु उनके चार बेटों में सबसे बड़ा था और बाजार में आरओ का पानी सप्लाई करता था। शांति देवी ने कहा कि यदि उनका विवाद न हुआ होता तो वह इतनी रात को घर न जातीं और मंदिर में ही सो जातीं। घूरपुर थाना अध्यक्ष हरिकेश सिंह ने बताया कि ग्रामीणों ने डंपर चालक को पकड़ लिया था। पुलिस ने चालक को हिरासत में ले लिया है। दोनों शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। मामले की आगे की जांच की जा रही है।

8,113 केंद्रों की सूची जारी, 243 राजकीय कॉलेज बाहर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद सचिव भगवती सिंह की ओर से सोमवार को बोर्ड की वेबसाइट पर सूची जारी कर दी गई। परीक्षाएं कुल 8,113 केंद्रों पर परीक्षा कराई जाएगीं। अपलोड की गई सूची में केंद्रों के नाम के साथ परीक्षार्थियों की संख्या भी अपलोड कर दी गई है। खास बात यह है कि इस सूची से 243 राजकीय कॉलेजों को परीक्षा केंद्रों से बाहर कर दिया गया है जबकि सहायता प्राप्त व वित्तविहीन कॉलेजों की संख्या बढ़ा दी गई है। सहायता प्राप्त 1,007 और वित्तविहीन 243 और कॉलेजों को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। इससे पहले 26 अक्तूबर को सॉफ्टवेयर की मदद से कुल 7,526 केंद्र बनाए गए थे। इसमें 862 राजकीय कॉलेज, 2,376 वित्त पोषित विद्यालय व 3,388 वित्तविहीन विद्यालय शामिल थे। अब जिलाधिकारी की अध्यक्षता वाली जनपदीय केंद्र निर्धारण समिति के अनुमोदन के बाद केंद्रों की संख्या बढ़ गई है। अब प्रदेश में 8,113 परीक्षा केंद्र बन गए हैं। इनमें 619 राजकीय, 3,383 सहायता प्राप्त व 4,111 वित्तविहीन विद्यालयों को केंद्र बनाया गया है। परीक्षा केंद्रों की सूची वेबसाइट नचउेच.मकन.पद पर देखी जा सकती है। इस नई सूची में तमाम ऐसे कॉलेज हैं, जहां छात्र–छात्राओं की संख्या घट गई है उन्हें दूसरे केंद्र पर भेज दिया गया है। अब अनंतिम सूची 27 नवंबर को जारी की जाएगी। बोर्ड की ओर से यह भी स्पष्ट किया गया है कि यदि छात्र, अभिभावक, प्रधानाचार्य या प्रबंधक को कोई आपत्ति हो, तो वे 21 नवंबर तक ऑनलाइन प्रत्यावेदन भेज सकते हैं। आपत्तियों के साथ साक्ष्य और उचित कारण भी बताना होगा।

पिछले महीने प्रस्तावित सूची में प्रयागराज जनपद में 269 विद्यालयों को केंद्र बनाया गया था लेकिन अब यहां 335 केंद्र बना दिए गए हैं। पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा परीक्षा केंद्र प्रयागराज में ही बनाए गए हैं। इसी तरह सबसे कम केंद्र शामली जनपद में हैं, जहां कुल 31 कॉलेजों को केंद्र बनाया गया है। इनमें चार राजकीय, 18 एडेड और नौ वित्तविहीन स्कूल केंद्र बनाए गए हैं।

संक्षिप्त

छात्राओं को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पुस्तकालय का शैक्षणिक भ्रमण कराया

लखनऊ, संवाददाता। नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेंद्र नगर, लखनऊ के दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा विभागाध्यक्ष डॉ. (मेजर) मनमीत कौर सोढ़ी तथा प्रवक्ता डॉ. क्षमा तिवारी के नेतृत्व में छात्राओं को विपुल खंड, गोमती नगर स्थित भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के शैक्षणिक केंद्र के पुस्तकालय का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। शैक्षणिक केंद्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. देवेंद्र जाटव तथा वरिष्ठ सलाहकार डॉ. जयशंकर सिंह ने छात्राओं को केंद्र की अकादमिक गतिविधियों एवं पुस्तकालय की समृद्ध संग्रह–व्यवस्था से परिचित कराया। उन्होंने बताया कि केंद्र के पुस्तकालय में दर्शनशास्त्र की उत्कृष्ट पुस्तकों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। यहां लगभग 42,000 से अधिक पुस्तकें एवं शोध पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। भ्रमण के दौरान छात्राओं ने विभिन्न पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं का अध्ययन किया तथा दर्शनशास्त्र के विविध विषयों पर हो रहे शोध कार्यों की जानकारी प्राप्त की। इस अनुभव से उन्हें उच्च स्तरीय अकादमिक अध्ययन एवं शोध की संभावनाओं को समझने का अवसर मिला। ये शैक्षणिक भ्रमण आगामी 19 नवंबर को आयोजित होने वाले विश्व दर्शन दिवस के उपलक्ष में कराया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी के अनुसार इस दिवस का उद्देश्य दार्शनिक विरासत को साझा करने के लिए विश्व के सभी लोगों को प्रोत्साहित करना तथा बुद्धिजीवियों एवं सभ्य समाज को सामाजिक चुनौतियों से लड़ने के लिए विचार विमर्श को प्रेरित करना है। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. मंजुला उपाध्याय ने कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण छात्राओं के ज्ञानवर्धन एवं बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

महिलाओं की भागीदारी में इजाफा,कम दिख रही 18 और 19 वर्ष की संख्या

लखनऊ, संवाददाता। यदि आंकड़ों के तुलनात्मक विश्लेषण करें तो स्थिति साफ है। 10 अप्रैल को जारी विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण एसआईआर की अंतिम सूची में 13.39 करोड़ वोटर थे, जो पिछले सात महीनों में बढ़कर 13.58 करोड़ हो गए हैं। इस अवधि में कुल 19 लाख नए मतदाता जुड़े हैं। राहत की बात यह है कि पुरुषों 7.87 लाख की वृद्धि की तुलना में महिला मतदाताओं 10.96 लाख की वृद्धि की संख्या अधिक बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप राज्य का जेंडर रेशियो 834 से बढ़कर 840 और ईपिक रेशियो 55.17 से बढ़कर 55.95 हो गया है।सीईओ ने बताया कि 18 और 19 वर्ष की संख्या इसलिए इतनी कम दिख रही है क्योंकि पहले जो 18 साल के थे अब वह 19 और जो 19 साल के थे वह 20 साल के हो गए हैं। जब चार जनवरी 2027 को अंतिम मतदाता सूची आएगी तो एक जनवरी 2027 को 18 साल की आयु पूरी करने वाले मतदाता बढ़ेगे और इसकी भरपाई होगी। तब जो अभी 17 साल के हैं तो वह बढ़ जाएंगे। ऐसे में 18 से 19 वर्ष वाले जो अभी 72.63 लाख कम दिख रहे हैं उनकी भरपाई हो जाएगी। फर्स्ट टाइम वोटरों को जोड़ने को अभियान चलेगा।

नाम जुड़वाने और संशोधन का कार्यक्रम

लखनऊ, संवाददाता। निर्वाचन आयोग ने छूटे हुए पात्र मतदाताओं को सूची में शामिल करने के लिए दावे और आपत्तियों की प्रक्रिया शुरू कर दी है। दावे और आपत्तियां आज मंगलवार 17 नवंबर से 16 दिसंबर तक चलती रहेगी। 28 दिसंबर को निस्तारण की अंतिम तिथि है। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 4 जनवरी 2027 को होगा। ऐसे लोग जो भारत के नागरिक हैं लेकिन वह दूसरे देश में रहते हैं तो वह फॉर्म–6 की जगह फॉर्म 6 ए ही भरें। क्योंकि विदेश में रहने वाले लोगों को एपिक कार्ड जारी नहीं किया जाता। वह पासपोर्ट दिखाकर वोट डालते हैं। उनका नाम मतदाता सूची में भी अलग कालम में लिखा होता है। उन्होंने कहा कि विदेश में रहने वाले किसी वोटर का फॉर्म 6 भरा गया होगा तो भरने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उसके खिलाफ लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 31 के तहत करवाई की जाएगी।

अनियंत्रित होकर पलटी स्विफ्ट कार, दो घायल

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के मड़ियांव थाना क्षेत्र में मंगलवार को आईआईएम रोड पर एक स्विफ्ट कार अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में कार सवार दो लोग घायल हो गए। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी और घायलों को बाहर निकालने में मदद की। जानकारी के मुताबिक, स्विफ्ट कार दुबग्गा से भिटौली की ओर जा रही थी। कार जब यादव चौराहे पर डेंटल कॉलेज के पास पहुंची, तभी अचानक अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में कार सवार चालक समेत दो लोग घायल हो गए। कार पलटने की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। सूचना मिलने पर मड़ियांव थाना प्रभारी इंस्पेक्टर आलोक राव पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से दोनों घायलों को कार से बाहर निकाला गया। इसके बाद उन्हें आईआईएम रोड स्थित डेंटल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल में भर्ती चालक की हालत ठीक बताई जा रही है। दोनों का उपचार जारी है। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त कार को सड़क से हटवाकर किनारे कराया। इसके बाद यातायात सामान्य हो सका। थाना प्रभारी आलोक राव के मुताबिक, कार अनियंत्रित होकर क्यों पलटी, इसकी वजह अभी स्पष्ट नहीं है। पुलिस हादसे के कारणों की जांच कर रही है।

देवदूत वानर सेना का लखनऊ में 22 नवंबर को महासम्मेलन

लखनऊ, संवाददाता। जरूरतमंदों की मदद के लिए देशभर में सक्रिय देवदूत वानर सेना के सदस्य 22 नवंबर को लखनऊ में जुटेंगे। इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के ज्यूपिटर हॉल में संस्था की ओर से महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा। सुबह 10 से शाम 6 बजे तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश के अलग–अलग राज्यों से करीब 10 हजार लोगों के शामिल होने का दावा किया गया है। सम्मेलन में सेवा कार्यों में योगदान देने वाले स्वयंसेवकों को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता भी दी जाएगी। हजरतगंज स्थित यूपी प्रेस क्लब में आयोजित प्रेस वार्ता में संस्था के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री विवेक सिंह तन्हा ने बताया कि कोरोना महामारी के दौरान वर्ष 2020 में जरूरतमंदों की मदद के उद्देश्य से अभियान शुरू किया गया था। सोशल मीडिया के जरिए मानवता और सहयोग का संदेश फैलाया गया। धीरे–धीरे देशभर से लाखों लोग इस मुहिम से जुड़ गए। महासम्मेलन के जरिए सभी सदस्यों को एक मंच पर मिलने और अपने अनुभव साझा करने का अवसर मिलेगा। इसमें दिल्ली, गुजरात, बिहार और मुंबई समेत कई राज्यों के पदाधिकारी और स्वयंसेवक शामिल होंगे।

रवीन्द्र कुशवाहा (प्रयागराज), रोहित राय (सुल्तानपुर) और अनीता दुबे (मंडला म०प्र०) को मिला विद्या वाचस्पति सम्मान

राष्ट्रीय प्रेस दिवस समारोह में पांच पुस्तकों को लोकार्पित किया गया

प्रयागराज। 16 नवंबर 2026 को करेली स्थित ब्लू बेल स्कूल के भव्यतम सभागार में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ का एक वृहद सम्मान एवं लोकार्पण समारोह वरिष्ठ साहित्यकार डा. शम्भूनाथ त्रिपाठी श्अंशुलश की अध्यक्षता एवं कार्यक्रम आयोजक तथा महासंघ के राष्ट्रीय संयोजक डा. भगवान प्रसाद उपाध्याय के संचालन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि मा. न्यायमूर्ति सुधीर नारायण,विशिष्ट अतिथि महासंघ के संरक्षक डा. बालकृष्ण पाण्डेय,वरिष्ठ साहित्यकार डा. जया मोहन,ब्लू बेल स्कूल के प्रबंधक संदीप कुशवाह को अंगवस्त्र व सम्मान–पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।



भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के इस आयोजन में प्रयागराज के वरिष्ठ चित्रकार एवं कवि रवीन्द्र कुशवाहा, मंडला म०प्र० की वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती अनीता दुबे तथा सुलतानपुर के युवा कवि रोहित राय को विद्या वाचस्पति सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी क्रम में डा. शंभुनाथ त्रिपाठी श्अंशुलश के कहानी संग्रह श्वघोलहिया भउजीश, डा. रामसुख यादव के उपान्यास भ्रम, पंडा और प्रयागराज, रामशंकर पटेल की पुस्तक श्जीवन सौन्दर्य सुख और शांतिश,चित्रकूट के वरिष्ठ साहित्यकार डा. सतीश श्बब्बाश के कहानी–संग्रह श्रिश्ते यहाँ भी बनते हैंश तथा डा. रामलखन चौरसिया वागीश की पुस्तक श्लघु काव्य कौमदीश का विमोचन मचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

सभी कवि–लेखक ने अपनी–अपनी पुस्तकों पर अपनी बात भी रखी तथा वाचस्पति सम्मान से सम्मानित साहित्यकारों ने भी अपने उद्गार प्रकट किये।कार्यक्रम के आरंभ में महासंघ के राष्ट्रीय साहित्य प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय प्रभारी डा. रामलखन चौरसिया ने समस्त अतिथिगण का शब्द–सुमन से स्वागत किया तथा पं. राकेश मालवीय श्मुस्कान श्ने अपनी काव्य–मणियों से सरस्वती वंदना की। इस अवसर पर डॉ योगेंद्र कुमार मिश्रा विश्वबंधु ,श्रंजन प्रकाशनश के व्यवस्थापक रंजन पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार डा. ऊषा मिश्रा, डा. अजय मालवीय श्बहारश, सुधीर तिवारी, महासंघ के देश दर्शन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय प्रभारी प्रदीप सिंह, डा. श्यामफतनपुरी, हरीश वर्मा ,केशव सक्सेना,शिव प्रसाद श्रीवास्तव सुनील दानिश, मुदित व चौतन्य मालवीय अश्विनी कुमार, पंकज गुप्ता, श्रीमती प्रेमलता यादव, गरिमा सिंह आदि अन्य रचनाकार भी उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षा पखवाड़े के अंतर्गत नवयुग कन्या महाविद्यालय में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं सड़क सुरक्षा शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

लखनऊ। सड़क सुरक्षा पखवाड़े के अंतर्गत नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेंद्र नगर में रोड सेफ्टी क्लब द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया तथा सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए।

प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्राओं को यातायात नियमों, सड़क संकेतों, हेलमेट एवं सीट बेल्ट के महत्व तथा सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के प्रति जागरूक करना था। छात्राओं ने अपनी जानकारी एवं जागरूकता का परिचय देते हुए प्रतियोगिता में सक्रिय सहभागिता की।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शगुन कदीमी वर्मा (बी.ए. प्रथम वर्ष), द्वितीय स्थान शालिनी विक्रम (बी.एस सी. प्रथम वर्ष) तथा तृतीय स्थान नेहा कुमारी (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने प्राप्त किया।

प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में शिक्षा शास्त्र विभाग की श्रीमती नीलम यादव द्वारा निभाई गई। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. मंजुला उपाध्याय ने विजेता छात्राओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया तथा सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने छात्राओं को सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने और समाज में भी इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का आयोजन रोड सेफ्टी क्लब की नोडल अधिकारी सुश्री दीक्षा के संयोजन में संपन्न हुआ।





कार्यक्रम का माध्यम से छात्राओं को यह संदेश दिया गया

इसी क्रम में 17 नवम्बर 2026 को नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ में सड़क सुरक्षा पखवाड़े के अंतर्गत सड़क सुरक्षा पर 100 से अधिक छात्राओं को शपथ दिलवाई गयी। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. मंजुला उपाध्याय के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर छात्राओं को सड़क सुरक्षा के विभिन्न नियमों एवं यातायात संकेतों की जानकारी दी गई। उन्हें दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट लगाने, निर्धारित गति सीमा का पालन करने, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने तथा यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान छात्राओं एवं उपस्थित सदस्यों को सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने तथा समाज के अन्य लोगों को भी सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का आयोजन प्रो. सीमा पाण्डेय, सुश्री दीक्षा एवं स्नेहा चौधरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं को यह संदेश दिया गया कि सड़क सुरक्षा केवल नियमों का पालन करना ही नहीं, बल्कि स्वयं एवं दूसरों के जीवन की सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना भी है।

प्रबुद्ध साथियों संग छठ पर्व पर प्राचीन सूर्य मन्दिर पहुँचे समाज शेखर, पुनरोद्धार हेतु होगी ठोस पहल

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम तीर्थ क्षेत्र में स्थित 8वीं शताब्दी के प्राचीन सूर्य मन्दिर का भ्रमण क्षेत्रीय प्रबुद्ध समाज के साथ भयहरणनाथ क्षेत्रीय विकास संस्थान के महासचिव समाज शेखर ने किया। ग्रामीण कार्यकर्ताओं से संवाद कर इस स्थल के विकास हेतु सरकार व समाज के स्तर पर ठोस पहल की कवायद शुरू हुई। तय हुआ कि जल्द धाम पर बैठक करके सूर्य मन्दिर के विकास व संरक्षण हेतु रणनीति बनाकर प्रभावी कार्यवाही शुरू की जायेगी।

सदर तहसील अंतर्गत नगर पंचायत कटरा गुलाब सिंह के शिवगंज, वार्ड स्वरूपुर में स्थित यह स्थल भयहरणनाथ धाम से पूर्व दिशा में बकुलाही नदी के पार 500 मीटर की दूरी पर है। 2011 में प्रदेश सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा शिवलिंग, सूर्य प्रतिमा व 5 अन्य स्तंभों को पंजीकरण किया गया और ग्राम सभा को इसकी जिम्मेदारी दी गई थी। 2015–16 में ग्रामीण विकास के दौरान धाम तक सड़क पहुँचाई गई और आंशिक अतिक्रमण हटाकर दर्शन पूजन बहाल किया गया था। ग्राम वासियों ने सूर्य मन्दिर विकास कोष का निर्माण किया है। जल्द ही बैठक करके समुचित विचार कर सरकार व समाज के स्तर पर प्रभावी कार्यवाही की जायेगी जिससे प्राचीन महत्व के इस स्थल का सर्वांगीण विकास हो सके। सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने स्थल के विकास हेतु संवाद किया, विधायक जीत लाल पटेल व नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार मुन्ना यादव ने भी हर संभव सहयोग का वायदा किया है। ग्रामीणों ने बताया कि राजस्व अभिलेखों में बंजर के रूप में 14 बिस्वा भूमि दर्ज है, इसका विकास गांव को समृद्धि की ओर ले जायेगा। वहीं उल्लेखनीय है कि यह स्थल गजेटियर व अन्य प्राचीन पुस्तको में अभिलखित है तथा प्रथम सर्वेयर जनरल आफ इंडिया अलेक्जेंडर कनिघम द्वारा भ्रमित स्थल है।



इस अवसर पर प्रमुख रूप से आरटीआई कार्यकर्ता राजीव नयन मिश्र, समाज सेवी आलोक सिंह व युवा नेता सूरज मिश्र तथा महेंद्र सिंह शामिल थे।

हुआ मन उर्जित

(छप्पय)

तन को मिली थकान हुआ मन उर्जित–उर्जित।
दिल के विमल विचार हुए हैं नर्तित–नर्तित।
जगा हृदय में जोश मिटा है सारा संशय।
ख़ामोशी भी आज कर रही है बस जय–जय।
त्योहारों की बात से केवल इतना सीख लो।
मीठी–बोली बोलकर इक दूजे को जीत लो।।

हृदय–हृदय संवाद कहानी नूतन–नूतन।
रचकर नव संसार खत्म करती है ऊबन।
दीपक से ले सीख ताप को खुद ही सहकर।
तेज हवाओं बीच प्रकाशित करता हँसकर।
सुखमय जीवन की यही अद्भुत प्यारी रीति है।
तिमिर बीच में भोर की सहज सलोनी प्रीति है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अन्तर्गत पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्याल, गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज द्वारा परिसर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 14.11.2026 से 20.11.2026 पर्यन्त किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन पुस्तकालय विभाग द्वारा किया जा रहा है। आज दिनांक 17.11.2026 को परिसरीय गंगासभागार में पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता



का आयोजन किया गया। परिसर के निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों में सम्मिलित एम.ए. प्रथम वर्ष (संस्कृत) के छात्र दिव्यांश शर्मा ने वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी के विषय में अपनी समीक्षा प्रस्तुत की। एम.ए. प्रथम वर्ष (संस्कृत) के छात्र प्रभात ने दर्शनशास्त्र विषय से सम्बन्धित, एम.ए. प्रथम वर्ष (संस्कृत) की छात्रा प्रेरणा गौड़ ने शिवराज विजय, कृतिका तिवारी ने काव्यदीपिका पुस्तक तथा एम.ए. द्वितीय वर्ष (संस्कृत) के छात्र विकास साहू ने वेदान्तसार के विषय में अपनी समीक्षाएँ प्रस्तुत की। परिसर के सहायक आचार्य डॉ. राजकुमार मिश्र उक्त प्रतियोगिता में निर्णायक रहे। कार्यक्रम के संयोजक उपपुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. रामरूप एवं सहसंयोजक अंकित मिश्र रहे। कार्यक्रम का संचालन परिसर के प्रोफेशनल सहायक डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर पाण्डुलिपि पण्डित शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, संगणक विशेषज्ञ एवं जनसम्पर्क अधिकारी राजेशकान्त तिवारी, प्रोफेशनल सहायक अंजू मिश्र, मंजू मिश्र, अभिषेक कुमार, गौरव श्रीवास्तव सहित अन्य परिसरीय सदस्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

दया धर्म का तथा अभिमान पाप का मूल है : रामकृष्ण दास जी महराज

प्रतापगढ़। दस हजार ब्राह्मनो की हत्या से बचाने के लिए भगवान श्री कृष्ण का एक नाम रणछोड़ पड़ा। भगवान राम सूर्य वंश के होने के कारण 12 कलाओं वाले हुए वहीं भगवान श्री कृष्णा चंद्रवंशी होने के कारण 16 कलाओं वाले कहे जाते हैं। क्यों कि सूर्य जहां 12कलाओं से पूर्ण है वहीं चंद्रमा 16कलाओं से पूर्ण है। कथा व्यास ने ध्रुव चरित्र अजामिलोपाख्यान, जड़ भरत चरित्र तथा प्रहलाद चरित्र की कथा विस्तार से कही। कथा व्यास ने कहा की दया धर्म का मूल है वही अभिमांन पाप का मूल है।कथा व्यास द्वारा कथा के बीच–बीच में समाज को अच्छा संदेश देते हुए कहा कि गौ, ब्राह्मण एवं संत की सेवा करने वाला ही एक अच्छा भक्त कहा जाता है। उन्होंने श्रोताओं को अच्छी सीख देते हुए बताया कि माता–पिता की सेवा करना,सत्य बोलने ,बच्चों में अच्छे संस्कार डालने से ही हमारे घर,परिवार,राज्य तथा एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण संभव है । वरिष्ठ अधिवक्ता देवी प्रसाद मिश्र ने कथा व्यास का माल्यार्पण कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सुशील त्रिपाठी ओम पंडित रामसेवक त्रिपाठी के आयोजन में चल रही श्रीमद् भागवत महापुराण सप्ताह ज्ञान यज्ञ में मुख्य रूप से वरिष्ठ पत्रकार आर के पांडे, ओम प्रकाश मिश्रा आचार्य अधिवक्ता, झल्लू मिश्रा, वरिष्ठ अधिवक्ता भूपेंद्र शुक्ला, राजेंद्र प्रसाद त्रिपाठी, राम ललन तिवारी, सच्चिदानंद शुक्ला, मनोज कुमार मिश्रा, रमापति मिश्रा, शैलेंद्र मिश्रा, विकास पांडे, रामराज पांडे, गोपी मिश्रा, विक्रम प्रताप सिंह, अमित पांडे, अनूप शुक्ला, धीरेंद्र पांडे, राम शिरोमणि पांडे, अमरनाथ वर्मा, लाल जी विश्वकर्मा , आशु नारायण विश्वकर्मा, माताफेर तिवारी, शेषनाथ विश्वकर्मा, नवनीत पांडे, जयप्रकाश गिरी, अवधेश ओझा, सहित सैकड़ो की संख्या में श्रोताओं ने कथा का रसपान किया।

नियुक्ति की मांग पर अभ्यर्थियों ने केजीएमयू में प्रशासनिक भवन–घेरा

लखनऊ, संवाददाता। केजीएमयू में नियुक्ति की मांग को लेकर चयनित अभ्यर्थियों ने मंगलवार को प्रशासनिक भवन का घेराव किया। अभ्यर्थी वर्ष 2024 में नॉन–टीचिंग पदों पर निकली भर्ती में चयनित हुए थे। उनका आरोप है कि चयन और डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन की प्रक्रिया पूरी होने के कई महीने बाद भी नियुक्ति पत्र नहीं दिया गया है। अभ्यर्थियों ने जल्द नियुक्ति पत्र जारी कर जॉइनिंग कराने की मांग की। उनका कहना था कि प्रक्रिया पूरी होने के बावजूद नियुक्ति के लिए इंतजार करना पड़ रहा है। इस दौरान मौके पर पहुंचे चीफ प्रॉक्टर ने अभ्यर्थियों को शांत कराने का प्रयास किया। उन्होंने अभ्यर्थियों को अनुशासन बनाए रखने की नसीहत भी दी। मौके पर पहुंचे चीफ प्रॉक्टर ने छात्रों से कहा, आप लोग केजीएमयू में ही जॉइन कर रहे हैं न। इस तरह रास्ता ब्लॉक करना ठीक नहीं है। आपको यहीं जॉइन करना है। डिसिप्लिन भी तो जरूरी है। साल 2024 में जारी भर्ती विज्ञापन संख्या 230,2024 के तहत 332 पदों पर सीधी भर्ती निकाली गई थी। इसे दो चरणों में पूरा किया गया। पहले चरण में 207 और दूसरे चरण में 125 पद शामिल थे। पहले चरण के कुछ पदों पर नियुक्तियां हो चुकी हैं, जबकि दूसरे चरण के अभ्यर्थी करीब पांच महीने से नियुक्ति पत्र का इंतजार कर रहे हैं।

सम्पादकीय.....

मुश्किलों के डेटा सेंटर

आज चारों तरफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का हौवा नजर आता है, जिसके लिए मानव की नैसर्गिक प्रतिभा और जीवन के जरूरी अवयवों को नजरअंदाज किया जा रहा है। माना कि एआई के विस्तार से आर्थिक विकास के नए अवसर पैदा हो रहे हैं, जिसके लिए डेटा सेंटरों का तेजी से अंधाधुंध विस्तार हो रहा है। वहीं दूसरी ओर, अमेरिका, यूरोप और भारत में इनके खिलाफ बढ़ता विरोध एक अहम चेतावनी भी है। निस्संदेह, तकनीकी प्रगति होनी चाहिए, लेकिन इसकी कीमत समाज और पर्यावरण को नहीं चुकानी चाहिए। अमेरिका में हालिया मध्यावधि चुनावों में डेटा सेंटर परियोजनाओं को लेकर लोगों का गुस्सा भी सामने आया है। वास्तव में, दुनिया भर के लोग डेटा सेंटरों को चलाने में इस्तेमाल होने वाली भारी–भरकम बिजली और पानी के बेतहाशा इस्तेमाल को लेकर नाराज हैं। वे स्थानीय संसाधनों पर पड़ने वाले इनके नकारात्मक प्रभावों को लेकर चिंतित हैं। यही वजह है कि अमेरिका के टेक्सास में पानी की घटती आपूर्ति को लेकर किसानों का गुस्सा वहां एक राजनीतिक मुद्दा बन गया है। कमोबेश ऐसा ही गुस्सा अमेरिका के अन्य राज्यों और कुछ यूरोपीय देशों में भी देखने को आ रहा है। इस विरोध का संदेश साफ है कि लोग अब उन बड़े फैसलों पर अपनी राय रखना चाहते हैं, जिनका असर उनके जीवन पर सीधा पड़ता है। इसी तरह, भारत में भी महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्य आज इस मुद्दे को लेकर अहम मोड़ पर खड़े नजर आते हैं। निस्संदेह, बड़े डेटा सेंटर प्रस्ताव निवेश की महत्वाकांक्षी पहल के साथ डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत कर सकते हैं। इससे रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। लेकिन इसके बावजूद कंपनियों को संसाधनों के प्रबंधन के जवाबदेह तौर–तरीकों को प्राथमिकता देनी चाहिए। हर डेटा सेंटर परियोजना में तीन मुख्य पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए, जिनमें व्यापार, समुदाय और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाया जाए। कंपनियों को ऊर्जा की खपत कम करने वाली तकनीकों, नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ कूलिंग सिस्टम को प्राथमिकता देनी चाहिए। वहीं, कम–से–कम पानी की खपत करने वाली तकनीकों में निवेश करना चाहिए। आंध्र प्रदेश के भोगापुरम में हालिया स्थानीय निकाय चुनावों में दो किसान जीते, जिसकी मुख्य वजह यह थी कि डेटा सेंटरों को लेकर उनकी चिंताएं मतदाताओं को तार्किक लगीं। किसी भी परियोजना को मंजूरी मिलने से पहले वहां के निवासियों को संसाधनों की खपत, पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव और परियोजना से होने वाले आर्थिक लाभों की जानकारी दी जानी चाहिए। विकास कार्यों में स्थानीय लोगों को केवल मूकदर्शक मानने के बजाय उनकी अहम हिस्सेदारी होनी चाहिए। निस्संदेह, डेटा सेंटर भारत के डिजिटल भविष्य को गति देने में योगदान कर सकते हैं। लेकिन इनकी सफलता को केवल निवेश के आंकड़ों या कंप्यूटिंग क्षमता से ही नहीं मापा जा सकता। वास्तव में, यह देखा जाना चाहिए कि स्थानीय लोगों को कितने रोजगार मिले, वहां कितने संसाधनों की बचत की गई और इससे स्थानीय समुदायों को कितना संबल मिला। सही मायने में, किसी भी विकास का लाभ सभी हितधारकों को मिलना चाहिए, न कि केवल बड़ी तकनीकी कंपनियों को।

वैश्विक राजनीति में बड़े बदलाव के आसार

डॉ. दीपक पाचपोर

बीते दिनों ब्राजील और सर्बिया के चुनाव परिणामों में उदार और लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति जनता का झुकाव नजर आया। फिर अमेरिका के मध्यावधि चुनावों में राष्ट्रपति ट्रंप को बड़ा झटका मिला।

वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में बीते कुछ वक्त से बहुत तेजी से बदलाव होता नजर आ रहा है। लगभग एक दशक से दुनिया में दक्षिणपंथी शक्तियों का बोलबाला दिखने लगा था। पूंजीवादी ताकतें तो हर दौर में राजनीति को नियंत्रण में रखने की कोशिश करती हैं, लेकिन इसके साथ–साथ कट्टरता भी बढ़ने लगी थी। अब यह सिलसिला टूटता नजर आ रहा है। बीते दिनों ब्राजील और सर्बिया के चुनाव परिणामों में उदार और लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति जनता का झुकाव नजर आया। फिर अमेरिका के मध्यावधि चुनावों में राष्ट्रपति ट्रंप को बड़ा झटका मिला। स्पेन में भी यही माहौल बन रहा है और इजरायल में भी सत्ता परिवर्तन के आसार बन चुके हैं, बेंजामिन नेतन्याहू बहुमत न मिलने के बावजूद किसी भी तरह सत्ता में बने रहने के लिए अपने प्रतिद्वंद्वी गादी आइजेनकोट से समझौता करने की कोशिशों में हैं। तो वैश्विक व्यवस्था में नजर आ रहे इस बदलाव के बीच अब एक और बड़ी खबर आई है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की त्रिपक्षीय बैठक होने जा रही है। एक वक्त में अमेरिका और रूस दो ही महाशक्तियां दुनिया को अपने इशारों पर नचा रही थीं, लेकिन इस बीच चीन की ताकत भी काफी बढ़ी। क्षेत्रफल और जनसंख्या के लिहाज से चीन पहले से ही आगे था, लेकिन उसने साम्यवादी व्यवस्था के नाम पर लगभग तानाशाही को ही अपनाए रखा, मगर इस बीच आर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक और तकनीकी लिहाज से खुद को काफी मजबूत कर लिया। चीन की बढ़ती ताकत के सामने अमेरिका की मनमानी पूरी तरह नहीं चल पाई। इधर रूस की ताकत सोवियत संघ के विघटन के बाद कम हुई, लेकिन फिर व्लादिमीर पुतिन के सत्ता में बने रहने से वैश्विक राजनीति में उसका महत्व बना रहा। तो वैश्विक राजनीति के तीन अहम किरदार, अमेरिका, रूस और चीन एक साथ बैठ रहे हैं, यह एक बड़ी परिघटना हो सकती है। दरअसल 18 और 19 नवंबर को चीन के शेनझेन में एशिया–पैसिफिक इकानॉमिक कोऑपरेशन (एपेक) का शिखर सम्मेलन हो रहा है, इस दौरान तीनों देशों के नेता अपनी पहली त्रिपक्षीय बैठक करेंगे। रूस का कहना है कि तीनों नेताओं की यह बैठक एपेक समिट के दूसरे दिन 19 नवंबर को हो सकती है। वैसे अभी से अनुमान लगाना कठिन है कि तीनों के बीच किस मुद्दे पर खास चर्चा होगी। क्योंकि तीनों की प्राथमिकताएं और वैश्विक राजनीति के समीकरण अलग–अलग हैं। माना जा रहा है कि इस बैठक में मुख्य रूप से परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने (न्यूक्लियर नॉन–प्रोलिफरेशन) पर चर्चा होगी। हालांकि अमेरिका और रूस के विशाल परमाणु जखीरे के सामने अपना भंडार बहुत छोटा होने की वजह से चीन की दिलचस्पी इसमें कितनी होगी, कहा नहीं जा सकता। लेकिन इस समय के हालात को देखते हुए इस बैठक में कई मुद्दे प्रभावी हो सकते हैं। अमेरिका ने इजरायल को बढ़ाने के लिए ईरान पर हमला किया और ट्रंप ने उसका नुकसान चुनाव में भुगत लिया। हालांकि इजरायल अब भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। ईरान पर हमले तेज करने की कोशिशें हो रही हैं, इधर गजा में हालात बेहद खराब हो चुके हैं। इजरायली राष्ट्रपति बेंजामिन नेतन्याहू ने गजा में नरसंहार किया है, लेकिन ट्रंप अब भी उसे बढ़ावा दिए जा रहे हैं। जबकि रूस और चीन न गजा पर हमले के पक्ष में थे, न ईरान के। बल्कि दोनों ने इसका विरोध ही किया है। इधर रूस और यूक्रेन के बीच भी युद्ध नहीं रुक रहा। अमेरिका यूक्रेन के बहाने नाटो का विस्तार करना चाह रहा था, लेकिन रूस के कारण उसकी मनमानी नहीं चली। इधर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का बढ़ता प्रभाव हर जगह बढ़ता जा रहा है, इसमें भी इन देशों के बीच होड़ लगी हुई है। तो देखना होगा कि इन तीनों देशों के बीच केवल परमाणु अप्रसार को लेकर चर्चा होगी, या व्यापार और आर्थिक सहयोग बढ़ाने पर बात होगी या अंतरिक्ष, ए आई जैसे क्षेत्रों में सहयोग करने पर सहमति बनेगी। वैसे जानकार इस बैठक की तुलना 1945 की याल्टा कॉन्फ्रेंस से कर रहे हैं। सोवियत संघ के क्रीमिया में याल्टा शहर में 4 से 11 फरवरी 1945 को बिग थ्री यानी अमेरिका, ब्रिटेन और सोवियत संघ के नेताओं के बीच बैठक हुई थी। जिसमें पराजित नाजी जर्मनी को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ के नियंत्रण वाले चार अलग–अलग क्षेत्रों में बांटने का फैसला किया गया। पोलैंड की सीमाओं और वहां की सरकार के पुनर्गठन पर सहमति बनी, तथा युद्ध से मुक्त हुए यूरोपीय देशों को लोकतांत्रिक तरीके से शासन चुनने का अधिकार देने की बात कही गई। इसी सम्मेलन में भावी संयुक्त राष्ट्र की संरचना और सुरक्षा परिषद में मतदान प्रणाली (वीटो अधिकार) पर सहमति बनी, जो आगे चलकर सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन का आधार बना। खैर याल्टा सम्मेलन का जो दूरगामी असर वैश्विक राजनीति पर पड़ा, वैसा ही कोई असर शेनझेन की बैठक से होगा, यह कहना फिलहाल जल्दबाजी होगी, क्योंकि 1945 से लेकर अब तक दुनिया में ढेर सारे बदलाव हो चुके हैं। हालांकि सियासी महत्वाकांक्षाएं अब भी वैसी ही हैं, लेकिन बदले तौर–तरीकों में उन्हें किस तरह से पूरा किया जाता है, अपना वर्चस्व दिखाने के लिए कौन सी रणनीतियां अपनाई जाती हैं, यह देखना दिलचस्प रहेगा।

राहुल ने कहा सच से हराएंगे, मोदी क्या सच का सामना कर पाएंगे?

शकील अख्तर

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हैदराबाद में वही कहा जो उनकी मां सोनिया गांधी ने अपनी किताब बिलान्गिंग रू ए जर्नी आफ लव में लिखा है। राहुल ने सत्य अहिंसा और प्रेम से जीतने की बात कही है। सोचिए उन नफरती, राहुल के ही शब्दों में उन क्रिमिनल माइंड सेट वालों के खिलाफ जिनकी राजनीति ही झूठ पर आधारित है। लेकिन राजनीति में समय ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। यही बात राहुल ने अगर पहले कही होती तो मीडिया उपहास उड़ाता। मगर अब राहुल ने अपनी मेहनत और सच बोलने की लगातार दिखाई हिम्मत से गोदी मीडिया और भाजपा को भी सोचने पर मजबूर कर दिया है। लगने लगा है कि मोदी का सिंहासन डांवाडोल है और यह कमाल उन्हीं की तरह झूठ और फरेब की राजनीति करके नहीं बल्कि सच बोलकर, लोगों में हिम्मत पैदा करके उन्हें साथ लेकर हुआ है। राहुल कहते हैं कि वे कोई काम प्लान बनाकर नहीं करते। हम उनकी इस बात को मानते हैं। इसके कई नुकसान भी देखे हैं और अब फार्म में आए एक बैट्समेन की तरह उसकी सफलता भी देख रहे हैं। एक फार्म में आया हुआ बैट्समेन जिस तरह स्कोर बोर्ड नहीं देखता, पब्लिक गैलरी से उठता हुआ तारीफ का शोर नहीं सुनता केवल उसकी आंखें बाल पर होती हैं वैसे ही राहुल की निगाहों में इस समय सिर्फ प्रधानमंत्री मोदी हैं। उन्हें वे रोज डिबेट के लिए ललकार रहे हैं। तथ्यों पर। आमने सामने। जज भी बोल दिया कि आपका होगा। संघ प्रमुख मोहन भागवत से लेकर अडानी तक किसी को बना लीजिए। टेलिप्राम्टर भी ले आइए। यह नई बात राहुल ने तब कही जब पत्रकारों के दीवाली मिलन में वे उन्हें बधाई के लिए भी टेलिप्राम्टर इस्तेमाल करते देखे गए। सब कुछ मोदी का कह दिया। बस एक बात ही नहीं कही है कि गोदी मीडिया को भी ले आइए! हो सकता है यह भी एक–दो दिन में कह दें। राहुल उन से आमने–सामने बात करने के बहुत इच्छुक हैं। लोकसभा में वे आते नहीं हैं। लेकिन यहां–वहां राहुल पर मनगढंत आरोप लगाते रहते हैं। यह कोई नई बात नहीं है। राहुल जब से राजनीति में आए हैं भाजपा और संघ उनके पीछे पड़े हुए हैं। मगर अब जब प्रधानमंत्री मोदी ने देशद्रोही, नक्सल जैसे शब्द कहे तो राहुल ने उन्हें डिबेट के लिए चौलेंज किया। राहुल का कहना है कि उनके पास सबूत हैं। मोदी को अमेरिका ने अपने हितों के लिए प्रधानमंत्री बनवाया और वही उन्हें चला रहा है। मोदी अमेरिका को खुश करने के लिए राष्ट्रीय हितों से समझौता कर रहे हैं। राहुल की बहुत सारी बातें पब्लिक डोमेन में हैं। मगर कुछ बातें बहुत विश्वसनीय सर्किल में। जहां से उनके पास खबरें आने लगी हैं। अपने खिलाफ हो रही साजिशों की लगातार आ रही जानकारी के बीच ही राहुल ने यह कहा कि वे लोग क्रिमिनल माइंड सेट के लोग हैं। कुछ भी कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर हरेन पांड्या, जज लोया के नाम आए। लेकिन राहुल ने दो बातें बहुत महत्वपूर्ण कहीं। एक वे मुझे भी मार सकते हैं। लेकिन डरा नहीं पाएंगे। मैं इन लोगों के खिलाफ आखिरी आखिरी तक लडूंगा। और दूसरी यह कि इन सबके बावजूद मैं इनसे भी नफरत नहीं करता। और यही बात राहुल ने अभी हैदराबाद में कही कि सत्य अहिंसा और प्रेम से विपक्ष मोदी सरकार को हराने जा रहा है। दुनिया में फासिस्ट ताकतें हर जगह सच से ही हारी हैं। हमारे देश का तो आदर्श वाक्य है सत्यमेव जयते! और यही सोनिया की किताब का मैसेज है। सत्य, प्रेम। झूठ, नफरत नहीं। सोचिए, सोनिया के खिलाफ इन लोगों ने क्या क्या नहीं कहा? क्या क्या नहीं किया? ईडी ने तीन दिन तक पूछताछ की। केस बनाया जिसे अदालत ने चलाने लायक भी नहीं समझा। संज्ञान तक नहीं लिया। इससे पहले मनमोहन सिंह के घर सीबीआई भेज दी थी कि वे डर कर कुछ सोनिया गांधी के खिलाफ कह दें। मगर उसमें भी सफलता नहीं मिली। और कहने की बात की तो कोई सीमा ही नहीं। एक से एक गंदे आरोप लगाए। उनकी बीमारी के समय भी। लेकिन सोनिया ने मनुष्यता की सारी गरिमा कायम रखते हुए इन लोगों के खिलाफ नफरत का एक शब्द भी नहीं लिखा। वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी भाजपा के दो प्रधानमंत्री दोनों के लिए उन्होंने लिखा कि कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं। जबकि वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी दोनों ने सोनिया के खिलाफ खूब व्यक्तिगत टिप्पणियां कीं। मोदी ने क्या क्या कहा लोगों को सब याद है। कांग्रेस की विधवा से लेकर जर्सी गाय तक, वायपेयी ने उन्हें विदेशी महिला कहा। मगर सोनिया की किताब में कहीं खटास नहीं। यहां तक कि मोदी की साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि का जिक्र सकारात्मक रूप से किया है। वाजपेयी की तो राजीव की हत्या के बाद घर आने का जिक्र करते हुए इसके लिए उनकी सराहना भी की। यही कांग्रेस का और गांधी नेहरू परिवार का संस्कार रहा है। महात्मा गांधी ने भी घृणा पाप से करो पापी से नहीं, कहा था। और सोनिया ने यही लिखा है कि– जो नेहरु गांधी ने कांग्रेस को सिखाया और जो कांग्रेस की विचारधारा है वही उन्होंने सीखा है। और सोनिया का अपने ऊपर हुए इतने व्यक्तिगत हमलों के बाद भी अपने राजनीतिक विरोधियों के प्रति इतना उदार और सहिष्णु बना रहना उसी विचारधारा की ताकत है। और राहुल उसी विचारधारा की ताकत से मोदी को हराने की बात करते हैं। मोदी अपने 12 साल की बात नहीं करते सत्ता में बने रहने के 25 साल का जिक्र करते हैं। मुख्यमंत्री का कार्यकाल भी जोड़कर। लेकिन इन 25 सालों में इतने कमजोर विकेट पर वे कभी नहीं रहे जितने इस समय हैं। राहुल ने उनकी छवि पूरी तरह तोड़ दी है। मोदी की ताकत उनका बहुत कौशल से गढ़ा नरेटिव (कहानी, छवि) था। 56 इंच की छाती, लाल आंखें, एक अकेला सब पर भारी! एक अजेय योद्धा की तरह। मगर इस साल के दोनों संसद सत्रों में लोकसभा में न आने और अब नेता प्रतिपक्ष की सीधी डिबेट के चौलेंज का सामना न कर पाने के कारण छवि दरक गई है। छवि बनाना आसान है। उसे बनाए रखना बहुत मुश्किल। मोदी इस समय इसी समस्या से जूझ रहे हैं। इसलिए राहुल ने कहा कि सच की राजनीति करना आसान है। झूठ की राजनीति की एक्सपायरी डेट होती है। वह आ गई। लोग कहते हैं कि मगर ज्ञानेश कुमार वहां बैठा हुआ है। सही कहते हैं। लेकिन राहुल ज्ञानेश को कुर्सी से उठाकर फैंक नहीं सकते। हां उनकी कुर्सी इतनी हिला सकते हैं कि वे खुद गिरने के डर से उससे उतर जाएं। मतलब इस्तीफा दे दें। पिछले दो महीने से वे गायब हैं। राहुल कहते हैं कि वे सो भी नहीं पा रहे। सही है दो तरफा दबाव है। मोदी इस्तीफा देने नहीं दे रहे। और राहुल कुर्सी पर बैठे नहीं रहने दे रहे। तो ज्ञानेश कुमार भी जाएंगे। चुनाव आयोग में सब समझ गए हैं तो जो हो गया वह भी ठीक होगा। लेकिन फिलहाल कोई नया नकारात्मक काम नहीं होगा। विपक्ष अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। राहुल भी मोदी की हार की जब बात करते हैं तो केवल कांग्रेस द्वारा नहीं हैदराबाद में भी उन्होंने विपक्ष हराएगा कहा। जनता में भी जागरूकता आई है। उसका दबाव बन रहा है। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट आयोग के खिलाफ राहुल की याचिका पर सुनवाई कर रहा है। अगर यह दबाव नहीं बना होता। राहुल मार्च करते हुए सुप्रीम कोर्ट नहीं गए होते तो यही कोर्ट कहता कि आपका नाम तो नहीं कटा। आप प्रभावित पक्ष नहीं हैं। याचिका खारिज कर देता! परिवर्तन की एक लंबी कड़ी है। जो अब साफ दिखने लगी है। दीवार पर उसके अक्षर उभरने लगे हैं। और उसी को पढ़ते हुए राहुल कहते हैं कि मोदी जाएंगे!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

बंकर राय की विदाई : सामाजिक कार्यों के एक युग का अंत

अमन नम्र

संजीत बंकर रॉय नहीं रहे। 10 नवंबर को राजस्थान के तिलोनिया में 81 साल की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके जाने से ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाने की एक ऐसी आवाज खामोश हो गई, जिसने पूरी दुनिया को विकास का एक अलग रास्ता दिखाया था। बंकर रॉय की जिंदगी को समझने के लिए उनके शुरुआती जीवन से शुरुआत करनी होगी। वर्ष 1945 में पश्चिम बंगाल के बर्नपुर में एक संपन्न और प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे संजीत रॉय की परवरिश विशेषाधिकारों के बीच हुई। पिता इंजीनियर थे। परिवार का सामाजिक और आर्थिक स्तर काफी अच्छा था। वर्ष 1956 से 1962 के बीच उनकी पढ़ाई देश के प्रतिष्ठित दून स्कूल, देहरादून में हुई। इसी स्कूल में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी भी पढ़े थे। वे राजीव गांधी के समकालीन और स्कूल के साथी थे। इसके बाद उन्होंने दिल्ली के प्रतिष्ठित सेंट स्टीफंस कॉलेज में दाखिला लिया। यहां से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। वे पढ़ाई में अच्छे थे, खेलों में भी शानदार थे। तीन बार राष्ट्रीय स्क्वैश चौंपियन बने। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व भी किया। यानी उनके सामने एक शानदार करियर के तमाम रास्ते खुले हुए थे, लेकिन 1965–66 के आसपास बिहार के अकाल प्रभावित इलाकों में जाना उनकी जिंदगी का निर्णायक मोड़ बन गया। वहां उन्होंने भूख, गरीबी, अभाव और ग्रामीण भारत की वास्तविक परिस्थितियों को करीब से देखा। उन्हें महसूस हुआ कि जिस भारत की कल्पना उन्होंने अपनी शिक्षा और शहरी परिवेश में की थी, वास्तविक भारत उससे बिल्कुल अलग है। उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि वे गलत स्कूल और गलत कॉलेज में पढ़कर एक तरह के अहंकार के साथ बाहर आए थे। बिहार के गांवों ने उनका यह अहंकार तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी जिंदगी की दिशा बदल दी। वर्ष 1972 में वे राजस्थान के अजमेर जिले के एक छोटे से गांव तिलोनिया पहुंचे। यह कोई ऐसा इलाका नहीं था जहां सुविधाएं थीं, संसाधन थे या विकास के बड़े अवसर थे, लेकिन बंकर रॉय ने इसी गांव को अपनी कर्मभूमि बना लिया। यहां उन्होंने सामाजिक कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र (एसडब्ल्यूआरसी) की स्थापना की, जो आगे चलकर बेयरफुट कॉलेज के नाम से दुनिया भर में पहचाना गया। उनका विचार बिल्कुल अलग था। वे मानते थे कि किसी गांव का विकास करने के लिए जरूरी नहीं कि शहरों से बड़े–बड़े इंजीनियर, डॉक्टर और विशेषज्ञ भेजे जाएं। गांव के लोगों के पास भी ज्ञान है, हुनर है, अनुभव है। जरूरत सिर्फ उनके हुनर को पहचानने, उन्हें प्रशिक्षित करने और उन पर भरोसा करने की है। उन्होंने साबित किया कि औपचारिक डिग्री न होने का मतलब यह नहीं कि किसी व्यक्ति में ज्ञान या तकनीकी क्षमता नहीं हो सकती। बेयरफुट कॉलेज में ग्रामीण महिलाओं को सोलर इंजीनियर बनाया गया। ऐसी महिलाएं, जिनमें से कई पढ़ना–लिखना भी नहीं जानती थीं, को सौर–ऊर्जा के उपकरणों को लगाना, उनकी मरम्मत करना और उनका रखरखाव करना सिखाया गया। दुनिया भर के गांवों से महिलाएं तिलोनिया पहुंचीं। उन्हें सोलर तकनीक में प्रशिक्षित किया गया और वे अपने गांवों में लौटकर बिजली की समस्या का समाधान करने लगीं। ग्रामीणों को हैंडपंप मैकेनिक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, दाइयां, शिक्षक और तकनीकी विशेषज्ञ बनाया गया। रात के स्कूल शुरू किए गए ताकि दिन में मजदूरी करने वाले बच्चे भी पढ़ सकें। जल–संरक्षण, वर्षा जल–संचयन, स्थानीय निर्माण तकनीक, ग्रामीण हस्तशिल्प, आजीविका और महिला सशक्तीकरण पर काम हुआ। इस मॉडल ने स्थापित किया कि विकास का मतलब सिर्फ शहरों की सुविधाएं गांवों तक पहुंचाना नहीं है। विकास का मतलब गांवों के भीतर मौजूद क्षमता को जगाना भी है। बंकर रॉय के काम को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। वर्ष 1985 में जमनालाल बजाज पुरस्कार,1986 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 2010 में टाइम मैगजीनश ने उन्हें दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में शामिल किया, लेकिन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि कोई पुरस्कार या सम्मान नहीं था। उनकी असली उपलब्धि वे हजारों ग्रामीण महिलाएं और पुरुष थे, जो उनके प्रयासों से अपने पैरों पर खड़े हुए। बंकर रॉय का जाना मुझे उन तमाम लोगों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी शिक्षा, ग्रामीण विकास, खेती और समाज के सबसे कमजोर तबके के बीच काम करते हुए गुजार दी। विनोद रैना याद आते हैं, जिन्होंने शिक्षा को सिर्फ स्कूलों और पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं रहने दिया। विज्ञान, बच्चों की समझ और शिक्षा में बराबरी के लिए उनका योगदान कितना महत्वपूर्ण था। संजय घोष याद आते हैं, जिन्होंने असम के ग्रामीण इलाकों में लोगों के साथ मिलकर काम किया और उल्फा उग्रवादियों ने जिनकी हत्या कर दी। पापा यानी श्याम बहादुर नम्र याद आते हैं, जिन्होंने शिक्षा, खेती और जैविक कृषि के क्षेत्र में अपना जीवन लगाया। जमीन से जुड़कर लोगों को आत्मनिर्भर बनाने का उनका प्रयास भी असाधारण था। देश में ऐसे तमाम लोग अभी भी मौजूद हैं, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी किसी विचार, किसी सामाजिक उद्देश्य या किसी वैकल्पिक व्यवस्था को खड़ा करने में लगा दी है। वे शिक्षा में हैं, खेती में हैं, ग्रामीण तकनीक में हैं, पर्यावरण संरक्षण में हैं, स्वास्थ्य और आजीविका के क्षेत्र में हैं। उनके पास किताबों में न मिलने वाला अनुभव है। उनके पास असफलताओं से निकली सीख है। उनके पास ऐसे प्रयोगों की कहानियां हैं, जिन्हें किसी विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में दोहराया नहीं जा सकता। इस दिशा में एक गंभीर पहल होनी चाहिए। एक ऐसी पहल, जिसका उद्देश्य हो–हमारे समय के जीवित अनुभवों का दस्तावेजीकरण। ऐसे लोगों की पहचान की जाए। उनके जीवन, संघर्ष, प्रयोगों और विचारों पर विस्तार से बातचीत की जाए। उनके काम के स्थानों पर जाकर उनके अनुभव दर्ज किए जाएं। उनके साथ काम करने वाले लोगों और उनसे लाभान्वित हुए समुदायों की कहानियां भी सामने लाई जाएं। उनके इंटरव्यू सिर्फ औपचारिक बातचीत न हों। यह समझने की कोशिश हो कि उन्होंने जो किया, वह क्यों किया? किन परिस्थितियों में किया? क्या गलतियां हुईं? क्या सीखा? उनके मॉडल को दूसरे इलाकों में कैसे लागू किया जा सकता है? उनकी बातचीत, वीडियो, ऑडियो, लेख, किताबें और शोध सामग्री को एक ऐसे सार्वजनिक डिजिटल आर्काइव में रखा जाए, जहां आने वाली पीढ़ियां उन्हें पढ़ और समझ सकें। बंकर रॉय ने अपनी जिंदगी से एक बहुत बड़ी बात सिखाई–समाज को बदलने के लिए हमेशा बड़े पद, बड़ी डिग्री और बड़े संसाधनों की जरूरत नहीं होती। कभी–कभी जरूरत सिर्फ एक ऐसे व्यक्ति की होती है, जो समाज के सबसे साधारण समझे जाने वाले लोगों की असाधारण क्षमताओं पर भरोसा कर सके। वे सिर्फ तिलोनिया में एक संस्था बनाकर भर नहीं गए हैं, बल्कि एक विचार छोड़कर गए हैं। आज उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उस विचार को समझें, आगे बढ़ाएं और अपने आसपास मौजूद ऐसे लोगों को उनके रहते हुए जानने, समझने और उनसे सीखने की कोशिश करें।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)



`तुम्बाड 2' में फिर लौटेंगे जेस्पर किड, रहस्यमयी दुनिया को अपने संगीत से देंगे नया आयाम

> 'असैसिन्स क्रीड', 'हिटमैन' और 'बॉर्डरलैंड्स' जैसी मशहूर फ्रेंचाइजी में अपने संगीत का जादू दिखा चुके जेस्पर इस बार भी 'तुम्बाड' की रहस्यमयी दुनिया को अपनी धुनों से खास बनाएंगे। साल २०१८ में रिलीज हुई 'तुम्बाड' की सफलता में उसके अनोखे संगीत का भी बड़ा योगदान रहा था।

सोहम शाह की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'तुम्बाड 2' को लेकर एक नया अपडेट सामने आया है। फिल्म के सीक्वल में एक बार फिर इंटरनेशनल म्यूजिक कंपोजर जेस्पर किड की वापसी होने जा रही है। 'असैसिन्स क्रीड', 'हिटमैन' और 'बॉर्डरलैंड्स' जैसी मशहूर फ्रेंचाइजी में अपने संगीत का जादू दिखा चुके जेस्पर इस बार भी 'तुम्बाड' की रहस्यमयी दुनिया को अपनी धुनों से खास बनाएंगे। साल 2018 में रिलीज हुई 'तुम्बाड' की सफलता में उसके अनोखे संगीत का भी बड़ा योगदान रहा था। जेस्पर किड ने फिल्म के लिए ऐसा म्यूजिक तैयार किया था, जिसने कहानी में मौजूद लोककथाओं, पौराणिक तत्वों, रहस्य और डर के माहौल को प्रभावशाली तरीके से पर्दे पर पेश किया। अब सीक्वल के लिए उनकी वापसी से फिल्म के पहले भाग से जुड़ा म्यूजिकल कनेक्शन भी बरकरार रहने वाला है। जेस्पर किड ने 'तुम्बाड 2' से जुड़ने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, "मैं 'तुम्बाड 2' के लिए संगीत तैयार करने और इस अनोखी दुनिया की एक और रोमांचक यात्रा का हिस्सा बनने को लेकर बेहद उत्साहित हूं। निर्देशक आदेश प्रसाद और सोहम शाह के साथ दोबारा काम करना शानदार अनुभव होगा। मुझे याद है कि जब मैंने पहली बार 'तुम्बाड' का शुरुआती वर्जन देखा था, तभी मुझे महसूस हुआ था कि यह सबसे बेहतरीन फिल्मी दुनियाओं में से एक है। अब दोबारा इस दुनिया में लौटकर संगीत के जरिए इसे और करीब से एक्सप्लोर करने का मौका मिल रहा है।"जेस्पर किड की वापसी पर सोहम शाह ने कहा कि 'तुम्बाड' की पहचान बनाने में उसके संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जेस्पर ने अपनी कंपोजिशन के जरिए फिल्म के वातावरण और कहानी को एक अलग पहचान दी थी। ऐसे में सीक्वल के लिए उनका दोबारा जुड़ना बेहद जरूरी था। सोहम के मुताबिक, टीम पहले से स्थापित इस क्रिएटिव साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए 'तुम्बाड' की दुनिया को नए अंदाज में पेश करना चाहती है। निर्देशक आदेश प्रसाद भी जेस्पर के साथ दोबारा काम करने को लेकर उत्साहित हैं। उन्होंने बताया कि पहली फिल्म के लिए उन्हें ऐसे संगीत की तलाश थी, जो कहानी के रहस्य, भव्यता और डरावने वातावरण को महसूस करा सके। जेस्पर ने उनके विचारों को समझते हुए फिल्म को एक अलग म्यूजिकल पहचान दी थी। अब 'तुम्बाड 2' में दोनों इस साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए संगीत के साथ कुछ नए प्रयोग करने की तैयारी में हैं। पहली फिल्म में जेस्पर ने रहस्यमयी धुनों, अलग–अलग वाद्ययंत्रों, ऑर्केस्ट्रा और सिंथेसाइजर का अनूठा मिश्रण तैयार किया था। इस प्रयोग ने फिल्म की कहानी और उसके पुराने दौर के वातावरण को एक खास अनुभव में बदल दिया था। उनके इसी काम के लिए उन्हें 2019 में क्रिटिक्स चॉइस फिल्म अवॉर्ड्स में बेस्ट स्कोर का सम्मान मिला था। इसके अलावा भी उन्हें कई पुरस्कार और नॉमिनेशन हासिल हुए। तुम्बाड 2' में सोहम शाह एक बार फिर अभिनेता और निर्माता की दोहरी भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन आदेश प्रसाद कर रहे हैं। वहीं, सीक्वल की कास्ट में आलिया भट्ट और नवाजुद्दीन सिद्दीकी के नाम भी शामिल होने की जानकारी सामने आई है। नए कलाकारों की एंट्री ने फिल्म को लेकर दर्शकों की दिलचस्पी और बढ़ा दी है। फिल्म का निर्माण सोहम शाह फिल्म्स और डॉ. जयंतीलाल गड़ा के पेन स्टूडियोज के सहयोग से किया जा रहा है। पेन स्टूडियोज इससे पहले 'आरआरआर' और 'गंगूबाई काठियावाड़ी' जैसी चर्चित फिल्मों से जुड़ा रहा है। अब यह प्रोडक्शन हाउस 'तुम्बाड 2' को बड़े स्तर पर दर्शकों तक पहुंचाने की तैयारी में है। बता दें कि 'तुम्बाड 2' दुनियाभर के सिनेमाघरों में 3 दिसंबर 2027 को रिलीज होगी। जेस्पर किड की वापसी, नई कास्ट और पहली फिल्म की रहस्यमयी दुनिया को आगे बढ़ाने की तैयारी के बीच इस सीक्वल का इंतजार लगातार बढ़ रहा है।



15 साल की हुई आराध्या बच्चन, अमिताभ बच्चन ने अपनी पोती के लिए लिखी बेहद प्यारी बात

अपनी पोती आराध्या बच्चन के जन्मदिन के मौके पर अमिताभ बच्चन ने अपने निजी ब्लॉग पर एक खास संदेश साझा किया। 16 नवंबर को आराध्या ने अपना 15वां जन्मदिन मनाया। अमिताभ बच्चन ने अपने बधाई संदेश में लिखा–मेरी पोती का जन्मदिन बहुत ही शानदार और मंगलमय हो, ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है। इसके साथ ही, उन्होंने अपने वफादार प्रशंसकों का भी शुक्रिया अदा किया और हर रविवार मिलने वाले उनके प्यार के लिए आभार जताया। बिग बी ने लिखा, घर की पोती का जन्म दिवस सुनहरा और भाग्यशाली रहे, ईश्वर से यही प्रार्थना...और जो स्नेह रविवार से मिला, वह अति स्मरणीय रहा। आप सभी की प्रार्थनाओं का अभिनंदन। अमिताभ और आराध्या बच्चन के बीच हमेशा से ही एक प्यारा और आत्मीय रिश्ता रहा है। 11 अक्टूबर की बात करें तो उनकी बहू ऐश्वर्या राय बच्चन ने जन्मदिन की एक पोस्ट शेयर की, जिसमें दादा और पोती की जोड़ी को बहुत ही प्यारे अंदाज में एक–दूसरे को गले लगाते हुए देखा गया। इसके कैप्शन में लिखा था–जन्मदिन मुबारक हो प्यारे पा–दादाजी! ढेर सारा प्यार और ईश्वर का आशीर्वाद हमेशा बना रहे। अमिताभ बच्चन के शब्दों को काव्यात्मक ढंग से पिरोने के जादू पर कभी कोई संदेह नहीं रहा है। पिछले लगभग दो दशकों से, बच्चन सर अपना एक ब्लॉग चला रहे हैं, जहां वे रोजाना अपने दिन भर के अनुभवों से जुड़ी कोई न कोई बात जरूर साझा करते हैं। क्या आप यकीन करेंगे कि यह आदत 2008 में एक शूटिंग के दौरान बिल्कुल संयोग से शुरू हुई थी? अपनी वैनिटी वैन में बैठे–बैठे उनके मन में कुछ पंक्तियाँ लिखने का विचार आयाएक ऐसा पल जिसे उन्होंने बाद में बस यूँ ही कहकर बताया था। अगले दिन उन्हें इस पर बहुत अच्छी प्रतिक्रियां मिलीं, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अगले दिन फिर कुछ लिखा। इसके बाद, उन्होंने रोजाना लिखने को एक नियम ही बना लिया और हर पोस्ट को एक नंबर (गिनती) के साथ दर्ज करना शुरू कर दिया यह सिलसिला आज भी जारी है।

अपनी अगली फिल्म के लिए रामायण की सीता ने कटवा लिए अपने बाल, एक्ट्रेस के इस फैसले पर नाराज हुई मां, पिता ने पूछा ये सवाल



निर्देशक राजकुमार पेरियासामी की बहुप्रतीक्षित एक्शन एंटरटेनर फिल्म ओम में अभिनेत्री साई पल्लवी एक अहम भूमिका निभा रही हैं। इस फिल्म में तमिल स्टार धनुष और मलयालम सुपरस्टार ममूटी मुख्य भूमिकाओं में हैं। साई पल्लवी ने खुलासा किया है कि फिल्म में शनित्या रेड्डीश का किरदार निभाने के लिए बाल कटवाने के उनके फैसले से उनकी मां नाराज हो गई थीं। एक यूट्यूब चौनल को दिए इंटरव्यू में निर्देशक राजकुमार ने बताया कि साई पल्लवी की माँ को यह नहीं पता था कि फिल्म में एक आईपीएस अधिकारी का किरदार निभाने के लिए वह अपने बाल कटवाने जा रही हैं। इस बारे में बताते हुए साई पल्लवी ने कहा, ष्मेरी मां हैरान रह गईं और उन्होंने फोन काट दिया। फिर मेरे पिता ने मुझे फोन किया और पूछा, पल्लवी, यह विग है न? मैंने उन्हें बताया कि मैंने अपने बाल कटवा लिए हैं। इसके बाद मेरे पिता ने मेरी मां को समझाया और उनसे मेरी बात करवाई। लेकिन इसमें काफी समय लग गया। साई पल्लवी ने आगे बताया, जब उन्होंने मुझे स्क्रिप्ट दी, तो मैं सोच रही थी कि मैं इस किरदार में कैसे फिट बैठूंगी। निर्देशक राजकुमार ने मुझे पै अधिकारी मेरिन जोसेफ की एक तस्वीर दिखाई और कहा कि उन्हें बिल्कुल वैसा ही लुक चाहिए। मैंने ध्यान दिलाया कि उनके बाल छोटे हैं। उन्होंने कहा, अगर तुम अपने बाल कटवा लोगी, तो तुम्हें वैसा ही लुक मिल जाएगा। राजकुमार सर जिस तरह से अपने किरदारों को लिखते हैं, उसे देखकर लगता है कि बस मुझे यह रोल करना ही है। मुझे अपने बाल कटवाने में कोई मुश्किल भी नहीं लगी। वैसे तो मैं अपने बाल नहीं कटवाती, लेकिन चूंकि वह फिल्म निर्देशित कर रहे थे और उन्हें वैसा ही लुक चाहिए था, इसलिए मैंने ठीक है कह दिया।फिल्म इस साल 20 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। गौरतलब है कि फिल्म के निर्माताओं ने पहले इसे 16 अक्टूबर को रिलीज करने की योजना बनाई थी। हालांकि, अभिनेता धनुष ने एक बयान जारी कर फिल्म की रिलीज टालने की घोषणा की थी। उन्होंने बताया कि सुपरस्टार रजनीकांत के सम्मान में उन्होंने अपनी फिल्म की रिलीज को टालने का फैसला किया है। रजनीकांत की फिल्म जेलर 2 15 अक्टूबर को रिलीज हुई थी। धनुष, जो इस फिल्म में तमिलनाडु पुलिस विभाग के एक इंटेलिजेंस ऑफिसर की भूमिका निभा रहे हैं, ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उनकी फिल्म दिवाली पर रिलीज नहीं होगी, क्योंकि उसी तारीख के लिए सूर्या की फिल्म की घोषणा पहले ही हो चुकी थी। बाद में, अभिनेता और निर्माता ने अपनी फिल्म की रिलीज के लिए 20 नवंबर की तारीख तय की। इस फिल्म को लेकर प्रशंसकों और सिनेमा प्रेमियों में काफी उत्साह है, क्योंकि यह पहली बार है जब धनुष और ममूटी किसी प्रोजेक्ट में एक साथ काम कर रहे हैं। बॉलीवुड स्टार नसीरुद्दीन शाह भी इस फिल्म का हिस्सा हैं। फिल्म के टाइटल के साथ चौप्टर 1 टैगलाइन भी जुड़ी है, जिससे संकेत मिलता है कि इसका सीक्वल भी आ सकता है। टाइटल टीजर लॉन्च इवेंट के दौरान, वंडरबार फिल्म्स के प्रमुख श्रेयस ने बताया कि यह धनुष के करियर की सबसे बड़े बजट वाली फिल्मों में से एक होगी। उन्होंने यह भी कहा कि यह फिल्म धनुष के उस पुराने मास अवतार को वापस लाएगी, जिसे देखने के लिए प्रशंसक लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। फिल्म में साई पल्लवी और श्रीलीला मुख्य अभिनेत्रियां हैं, और इसका संगीत साई अभ्यंकर ने दिया है। फिल्म की सिनेमैटोग्राफी एझिल अरासु ने की है, एडिटिंग कलाईवानन आर ने की है, और कॉस्ट्यूम डिजाइन का काम काव्या श्रीराम ने संभाला है।



अविनाश मिश्रा को अनफॉलो करने के बाद महाकाल के दरबार पहुंचीं ईशा सिंह

टीवी अभिनेत्री ईशा सिंह इन दिनों अपने काम से ज्यादा अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में हैं। ईशा सिंह और अभिनेता अविनाश मिश्रा के अफेयर की खबरें अक्सर सुर्खियों में रहती थीं, लेकिन अब चर्चा है कि दोनों के रास्ते अलग हो गए हैं। ईशा सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर अविनाश मिश्रा को अनफॉलो कर दिया है, जिसके बाद से उनके ब्रेकअप की अटकलें तेज हो गई हैं।

पार्टी में सरेआम किया था प्यार का इजहार, अब ईशा ने किया अनफॉलो

गौरतलब है कि अविनाश मिश्रा ने श्खतरों के खिलाड़ी 15श जीतने की खुशी में एक पार्टी रखी थी। इस पार्टी में अविनाश ने सबके सामने ईशा सिंह से ष्आई लव यू बेबीष कहा था और जवाब में ईशा ने भी ष्आई लव यू टूष कहकर सभी को चौंका दिया था। उस समय लोगों को लगा था कि दोनों ने अपने रिश्ते को आधिकारिक कर दिया है। लेकिन अब ईशा ने इंस्टाग्राम पर अविनाश को अनफॉलो कर दिया है, हालांकि अविनाश अभी भी ईशा को फॉलो कर रहे हैं। इंस्टाग्राम के साथ–साथ रेडिट पर भी दोनों के अलग होने की खूब चर्चा हो रही है।

इस बीच ईशा सिंह हाल ही में उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन करने पहुंचीं। उन्होंने अपनी उज्जैन यात्रा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं, लेकिन इसके साथ लिखे उनके कैप्शन ने सबका ध्यान खींच लिया। ईशा ने अपनी पोस्ट में लिखा, ष्महाकाल के दर्शन करने का लंबे वक्त से इंतजार कर रही थी और भोपाल से होने के नाते उज्जैन बहुत पास है। लेकिन कहते हैं ना, जब तक बुलावा नहीं आता है, आप नहीं जाते। मुझे लगता है कि उनके अपने ही प्लान थे। मुझे उन्होंने तब बुलाया, जब मुझे उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मुझे पता है कि उन्हें हर चीज की खबर है और मुझे भरोसा है कि वे हमेशा मेरी रक्षा करेंगे। जय श्री महाकाल, हर हर महादेव। ईशा की इस पोस्ट के अलावा उनकी मां रेखा सिंह की एक इंस्टाग्राम स्टोरी भी सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है, जिसे लोग इस पूरे मामले से जोड़कर देख रहे हैं। रेखा सिंह ने अपनी स्टोरी में लिखा, ष्समय हर व्यक्ति को उसके कर्मों का दर्पण जरूर दिखाता है। इसलिए किसी के व्यवहार से खुद को टूटने नहीं देना है। सही तरीका यही है कि शांत रहो और अपने रास्ते पर चलते रहो, क्योंकि उत्तर शब्द नहीं, समय देता है।



रेडियो जॉकी बनकर विद्या बालन ने जीता था दिल, तुम्हारी सुलु की इन 5 बातों ने बनाया यादगार

कुछ फिल्में ऐसी होती हैं, जिनकी कहानी खत्म होने के बाद भी उनके किरदार और उनसे जुड़ी भावनाएं लंबे समय तक याद रहती हैं। विद्या बालन की फिल्म तुम्हारी सुलु भी ऐसी ही फिल्मों में शामिल है। 17 नवंबर 2017 को रिलीज हुई इस फिल्म ने अपने नौ साल पूरे कर लिए हैं। एक साधारण गृहिणी के असाधारण आत्मविश्वास और कुछ नया करने की चाहत को फिल्म ने इतने सहज अंदाज में दिखाया कि दर्शक सुलु से खुद को जोड़ पाए। हंसी–मजाक, पारिवारिक रिश्तों और आत्मनिर्भरता की बात करती यह कहानी आज भी उतनी ही ताजा महसूस होती है। आइए जानते हैं वे 5 वजहें, जिन्होंने तुम्हारी सुलु को एक यादगार फिल्म बनाया। फिल्म की सबसे बड़ी ताकत विद्या बालन का अभिनय था। उन्होंने सुलोचना यानी सुलु के किरदार को किसी आदर्श महिला की तरह पेश करने के बजाय एक ऐसी आम महिला के रूप में दिखाया, जिसमें खूबियां भी थीं और कमियां भी। उसका मजाकिया स्वभाव, छोटी–छोटी बातों पर खुश होना और जिंदगी को अपने तरीके से जीने की आदत दर्शकों को खूब पसंद आई। विद्या ने अपने सहज अभिनय से इस किरदार को इतना वास्तविक बनाया कि सुलु सिर्फ फिल्म की एक भूमिका न रहकर दर्शकों के बीच अपनी पहचान बनाने में कामयाब रही। तुम्हारी सुलु की कहानी का खास पहलू यह था कि इसमें सफलता का मतलब सिर्फ बड़ी नौकरी या ऊंचा मुकाम हासिल करना नहीं था। फिल्म ने उस इच्छा को केंद्र में रखा, जो कई बार घर–परिवार की जिम्मेदारियों के बीच दबकर रह जाती है। सुलु भी एक पत्नी और मां होने के साथ अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। रेडियो जॉकी बनने का उसका फैसला इसी सोच को आगे बढ़ाता है। फिल्म बताती है कि किसी नए काम की शुरुआत करने के लिए न उम्र मायने रखती है और न ही पहले का अनुभव। जरूरी है तो बस खुद पर भरोसा और कोशिश करने का हौसला। फिल्म में सुलु के पति अशोक के किरदार में मानव कौल नजर आए थे। विद्या और मानव की जोड़ी ने शादीशुदा जिंदगी के उन पहलुओं को पर्दे पर उतारा, जिनसे ज्यादातर परिवार खुद को जोड़ सकते हैं। दोनों के बीच प्यार के साथ छोटी–मोटी तकरार, एक–दूसरे से उम्मीदें और कई बार विचारों का टकराव भी देखने को मिलता है। खास बात यह रही कि अशोक और सुलु का रिश्ता सिर्फ रोमांस तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें एक–दूसरे के फैसलों को समझने और सपनों को जगह देने की कोशिश भी दिखाई गई। दोनों कलाकारों की केमिस्ट्री ने फिल्म को भावनात्मक रूप से और मजबूत बनाया। सुलु की जिंदगी में रेडियो जॉकी बनने का मौका एक बड़ा बदलाव लेकर आता है। माइक के सामने बैठकर अनजान लोगों से बातचीत करना, उनकी परेशानियां सुनना और अपनी आवाज के जरिए उन्हें बेहतर महसूस कराना उसके लिए एक नया अनुभव था। फिल्म ने रेडियो की दुनिया को सिर्फ एक पेशे के रूप में नहीं, बल्कि लोगों के बीच भावनात्मक जुड़ाव बनाने वाले माध्यम के तौर पर दिखाया। देर रात के शो और कॉलर्स के साथ सुलु की बातचीत फिल्म के कई दिलचस्प और मनोरंजक पलों का हिस्सा बनी। इसी सफर में उसका आत्मविश्वास भी धीरे–धीरे बढ़ता है। तुम्हारी सुलु की खूबसूरती इस बात में थी कि इसे प्रभावशाली बनाने के लिए किसी बड़े ड्रामे या असाधारण घटनाओं का सहारा नहीं लिया गया।



केमिकल छोड़ें, ये DIY आयुर्वेदिक फ्रेशनर मिनटों में घर को देगा अद्भुत ताजगी और सकारात्मकता

क्या आपको भी यह महसूस होता है कि आप चाहे कितना भी अपने कमरे की सफाई कर लें। लेकिन फिर भी कमरे से एक अजीब सी बासी बदबू आती रहती है। अक्सर लोग इसको गंदगी, धूल या साफ–सफाई की कमी समझ लेते हैं। लेकिन आयुर्वेद के मुताबिक इसका असली कारण धूल या गंदगी नहीं बल्कि यह जीवन ऊर्जा के ठहराव की निशानी होती है। जब कमरे में यह ऊर्जा रुक जाती है, तो भले ही कमरा बाहर से पूरी तरह से व्यवस्थित और साफ लगे, लेकिन स्फूर्ति, ताजगी और सकारात्मक वातावरण की कमी महसूस होती है। इसलिए आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक बेहद नेचुरल, आसान और आयुर्वेदिक रूम फ्रेशनर रेसिपी के बारे में बताने जा रहे हैं। यह न सिर्फ आपके कमरे में मनमोहक सुगंध फैलाएगा। बल्कि यह आपके घर के वातावरण को ऊर्जा और पॉजिटिविटी से भर जाएगा। यह पूरी तरह से प्राकृतिक और केमिकल फ्री है। तो आइए जानते हैं इस रूम फ्रेशनर को बनाने और इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में...

सामग्री

नींबू के पतले स्लाइस– 4–5

ताजी पुदीने की पत्तियां– एक मुट्ठी

रोजमेरी या तुलसी की पत्तियां– 1–2 टहनी

गुनगुना पानी– 1 कप

बनाने की तरीकाइन सभी चीजों को एक छोटे से जार या कांच की कटोरी में डालें। इसको कमरे के किसी कोने में खुला रख दें।

अब चाहें तो इन चीजों को मिक्सर में ब्लेंड करके छान लें और फिर इसको एक स्प्रे बोतल में भरकर रख दें। जब भी हवा घुटी–घुटी या हवा भारी लगे, तो बस कुछ स्प्रे करें।

इस स्प्रे से मिनटों में आपका कमरा बिना किसी आर्टिफिशियल या केमिकल रूम फ्रेशनर के शांत, हल्का और प्राकृतिक सुगंध से भरपूर महसूस होगा।

जानिए रूम फ्रेशनर में मौजूद चीजों के फायदे

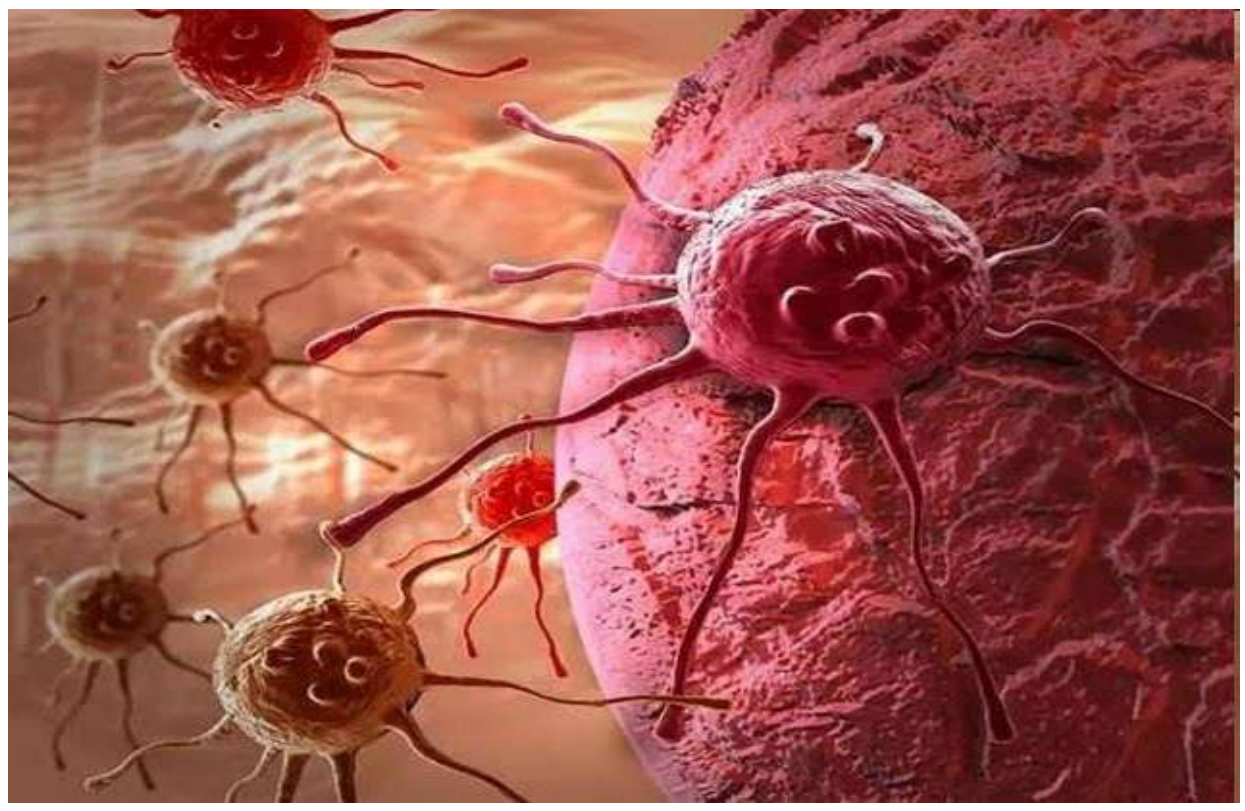
बता दें कि नींबू के स्लाइस हवा को शुद्ध करते हैं और इसमें पाए जाने वाले सिट्रस एसिड्स कमरे में जमी निगेटिव एनर्जी को दूर करते हैं और वातावरण को फ्रेश बनाते हैं। वहीं नींबू की खुशबू मन को ऊर्जावान और हल्का महसूस कराती है, जिससे थकान और तनाव कम होता है।

पुदीने की पत्तियां तनाव और मानसिक थकान को कम करने का काम करती है। पुदीना सुगंधित हर्ब होने के साथ नेचुरल ठंडक देता है। इसको कमरे में रखने मात्र से ही फोकस करने की क्षमता बढ़ती है और ब्रेन को तरोताजा महसूस होता है।

वहीं रोजमेरी एकाग्रता बढ़ाती है और तुलसी वातावरण को पवित्र बनाती है। रोजमेरी की ताजगी भरी सुगंध दिमाग को राहत देती है और पूरे कमरे का माहौल भी ऊर्जा से भरपूर हो जाता है। इसके साथ ही तुलसी की खुशबू निगेटिविटी और बुरी ऊर्जा को दूर करने में काफी असरदार मानी जाती है।

पानी सारी सुगंधों को मिलाकर प्राकृतिक खुशबू बिखेरता है और यह मिश्रण कमरे में फैलने के बाद न सिर्फ वातावरण को तरोताजगी और ऊर्जा से भर देता है, बल्कि संतुलन और मानसिक शांति भी देता है।

कैंसर का दुश्मन है ये फल! सिर्फ दो महीने मिलता है, जानिए इसके गजब के फायदे



भारत में मौसमी फलों का अपना ही मजा है। इन्हीं में से एक है शरीफा, जिसे सीताफल भी कहा जाता है। यह फल पूरे साल नहीं मिलता, बल्कि केवल अक्टूबर और नवंबर में ही बाजार में दिखाई देता है। स्वाद में बेहद मीठा और पोषक तत्वों से भरपूर यह फल सेहत के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। शरीफा में विटामिन A, B6, पोटैशियम, कॉपर, मैग्नीशियम, जिंक और कई तरह के एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यही वजह है कि इसे कैंसर का दुश्मन फल भी कहा जाता है।

कैंसर कोशिकाओं से लड़ने में सहायक

शरीफा में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स और फ्लेवोनोइड्स शरीर में हानिकारक कैंसर कोशिकाओं के फैलाव को रोकने में अहम भूमिका निभाते हैं। इसके नियमित सेवन से इम्यूनिटी मजबूत होती है, शरीर में जमा सूजन कम होती है और फ्री रेडिकल्स नष्ट होकर सेल्स को नुकसान से बचाते हैं।

दिल की सेहत का रखता है ध्यान

शरीफा में मौजूद पोटैशियम और मैग्नीशियम ब्लड प्रेशर को संतुलित रखने में मदद करते हैं और दिल पर पड़ने वाले तनाव को कम करते हैं। विशेष रूप से मैग्नीशियम दिल की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, जिससे हार्ट अटैक और अन्य कार्डिएक समस्याओं का खतरा कम हो जाता है।

वजन बढ़ाने में बेहद मददगार

यदि आपका वजन लंबे समय से नहीं बढ़ रहा है, तो सुबह खाली पेट शहद के साथ शरीफा खाना बेहद लाभकारी माना जाता है। इसमें मौजूद कॉपर और फाइबर पाचन शक्ति को मजबूत बनाते हैं, पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाते हैं और कब्ज की समस्या दूर करते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त ऊर्जा मिलती है और वजन धीरे–धीरे बढ़ने लगता है।

त्वचा और बालों के लिए वरदान

शरीफा विटामिन । और कॉपर का बेहतरीन प्राकृतिक स्रोत है, जो त्वचा और बालों दोनों के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। इसके नियमित सेवन से त्वचा अधिक ग्लोइंग और हेल्दी दिखाई देती है, झुर्रियों और उम्र के निशान कम होते हैं, जबकि कॉपर बालों की जड़ों को मजबूत बनाकर उन्हें घना और मजबूत बनने में मदद करता है।

अस्थमा रोगियों के लिए फायदेमंद

सीताफल में पाया जाने वाला विटामिन ठ6 ब्रॉन्कियल इंफ्लेमेशन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे अस्थमा के दौरे पड़ने की संभावना घटती है, वायुमार्ग रिलैक्स होते हैं और सांस लेने में आसानी होती है। नियमित सेवन अस्थमा रोगियों के लिए विशेष रूप से लाभदायक माना जाता है।

प्रेग्नेंसी में बेहद उपयोगी

गर्भवती महिलाओं के लिए शरीफा एक अत्यंत लाभकारी मौसमी फल माना जाता है। यह भ्रूण के दिमाग और नर्वस सिस्टम के विकास में अहम भूमिका निभाता है, साथ ही मिसकैरेज के खतरे को कम करने में भी सहायक है। इसके नियमित सेवन से मां की पाचन शक्ति मजबूत होती है और गर्भावस्था के दौरान होने वाली कमजोरी भी दूर होती है।

सीताफल का धार्मिक महत्वः सीताफल को कई जगहों पर पवित्र फल माना जाता है। मंदिरों में इसे प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। इसकी तासीर ठंडग होती है और स्वाद इतना मीठा कि चीनी भी इसके सामने फीकी लगती है।

सीताफल का पेड़ः लंबे समय तक देने वाला फलदार पौधा

सीताफल का पेड़ लगभग 40–50 साल तक जीवित रह सकता है और घर के आसपास आसानी से लगाया जा सकता है। अक्टूबर,नवंबर में यह फल बड़ी आसानी से बाजार में उपलब्ध हो जाता है। शरीफा सिर्फ एक फल नहीं, बल्कि पोषक तत्वों का खजाना है। कैंसर से लड़ने से लेकर दिल, त्वचा, बाल, वजन और प्रेग्नेंसी तककृयह हर तरह से शरीर को फायदा पहुंचाता है। अगर आप इस सीजन में शरीफा देखकर आगे बढ़ गए, तो समझिए आपने एक प्राकृतिक दवा को खो दिया!



बच्चे की है पहली ठंड ? तो ज्यादा केयर करने के चक्कर में मत करना ये गलतियां

नए माता–पिता अक्सर सोचते हैं कि सर्दियों में अपने बच्चों को कैसे कपड़े पहनाएं। ठंडी जगहों पर या कड़ाके की ठंड के दौरान बच्चे को आरामदायक स्थिति में रखना एक बड़ी चिंता का विषय हो सकता है। नवजात शिशुओं के शरीर में अपना तापमान खुद नियंत्रित करने की क्षमता अभी विकसित हो रही होती है, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि उन्हें गर्म रखा जाए लेकिन इतना भी गर्म नहीं कि उन्हें परेशानी हो। कुछ बातों का ध्यान रखकर, आप सर्दियों में अपने बच्चे को सुरक्षित और आरामदायक रख सकते हैं। जानें कि सर्दियों में बच्चे को कैसे कपड़े पहनाएं। नए माता–पिता सर्दियों के मौसम में अपने बच्चे को बाहर ले जाने से हिचकिचा सकते हैं, लेकिन जब भी संभव हो उन्हें सुरक्षित तरीके से बाहर ले जाना जरूरी है।बाल रोग विशेषज्ञ (पीडियाट्रिशियन) समझाते हैं कि–बच्चों और नए माता–पिता, दोनों को ताजी हवा की जरूरत होती है। जब तक कि बाहर बहुत ज्यादा (खतरनाक हद तक) ठंड न हो, तब तक बच्चों को बाहर ले जाने से उन्हें मौसम और दिन–रात के चक्र के साथ ढलने में मदद मिलती है, और इससे अक्सर उनका चिड़चिड़ापन भी कम हो जाता है। जब तापमान फ्रीजिंग पॉइंट (0°C) से नीचे चला जाए, तो बहुत छोटे बच्चों को ज्यादा देर तक बाहर नहीं ले जाना चाहिए। यहां तक कि जब तापमान फ्रीजिंग पॉइंट से ऊपर हो, तब भी ठंडी हवाओं के कारण बाहर रहना खतरनाक हो सकता है। पीडियाट्रिशियन के अनुसार नवजात शिशुओं और छोटे बच्चों में अपने शरीर के तापमान को खुद नियंत्रित करने की क्षमता नहीं होती है। वह सलाह देते हैं कि बच्चों को ठंड में कुछ मिनटों से ज्यादा न रखें और बर्फ में खेलने का मजा तब लेने दें जब वे थोड़े बड़े हो जाएं। दरअसल बड़ों की तुलना में बच्चों के शरीर से गर्मी जल्दी निकल जाती है। बच्चा जितना छोटा होगा, ठंड को सहने की उसकी क्षमता उतनी ही कम होगी। वह आगे कहती हैं, छोटे बच्चों में कांपकर शरीर की गर्मी बढ़ाने की क्षमता नहीं होती, और न ही उनके शरीर में इतनी वसा (जि) होती है कि ठंड लगने पर वे खुद को फिर से गर्म कर सकें।

सर्दियों में अपने बच्चे को गर्म कैसे रखें?

अगर आप घर के अंदर नहीं रह सकते (या नहीं रहना चाहते) और बाहर ठंड बढ़ रही है, तो यहां कुछ विशेषज्ञ तरीके दिए गए हैं जिनसे आप अपने बच्चे को सुरक्षित और गर्म रख सकते हैं।

बच्चे को कई परतों (संलमते) में कपड़े पहनाएंः सर्दियों में बच्चे को कपड़े पहनाते समय श्लेयरिंगश (कई परतें पहनाना) सबसे जरूरी है। एक अच्छा नियम यह है कि आप अपने कपड़ों की तुलना में बच्चे को एक परत ज्यादा पहनाएं।

कार में बच्चे को कोट न पहनाएंः ठंड के मौसम में भी, यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि कार सीट पर बच्चे को कभी भी कोट या स्नोसूट (बर्फ से बचाने वाला सूट) पहनाकर न बैठाएं। इसके बजाय पहले बच्चे को कार सीट पर बेल्ट लगाकर बिठाएं, और जरूरत पड़ने पर उसके ऊपर कोई और चीज (जैसे कंबल) डाल दें। बहुत ज्यादा ठंड होने पर बच्चे को अच्छे से ढककर रखेंः अगर तापमान बहुत कम (फ्रीजिंग पॉइंट से नीचे) हो जाए, या ठंडी हवा और बारिश हो रही हो, तो बच्चे को घर के अंदर ही रखें। अगर बाहर बहुत ज्यादा कड़ाके की ठंड नहीं है, तो बच्चे को विंटर जैकेट, कान ढकने वाली टोपी, दस्ताने (मिटन्स) पहनाएं और उसे कंबल या बंटिंग (बच्चों को ढकने वाला कवर) से ढक दें। बच्चे को अपने शरीर से सटाकर रखेंः ठंड के मौसम में, बेबी कैरियर का इस्तेमाल करके आप अपने शरीर की गर्मी से बच्चे को अतिरिक्त गर्माहट दे सकते हैं ऐसे में शायद उसे किसी और स्वेटर की जरूरत न पड़े।

स्ट्रॉलर को पूरी तरह न ढकेंः ज्यादा सावधानी बरतने के चक्कर में, हो सकता है कि आप बच्चे के स्ट्रॉलर पर कंबल डाल दें या उसे पुराने जमाने वाले प्लास्टिक कवर से ढक दें। लेकिन ऐसा करने से स्ट्रॉलर के अंदर हवा का आना–जाना रुक सकता है, जिससे दम घुटने या सडन इन्फेंट डेथ सिंड्रोम का खतरा बढ़ सकता है।

विंटर में ब्रेकफास्ट में बनाएं पौष्टिक से भरपूर मेथी-बाजरा का चीला

विंटर सीजन में शरीर में गर्माहट लाने के लिए कई सारे आहार का सेवन करना पड़ता है। इस मौसम में पोषण से भरपूर आहार खाने चाहिए, जो शरीर को भी गर्माहट पहुंचाए। सर्दियों के दौरान बाजरा और मेथी का गजब का कॉम्बिनेशन है। यह शरीर को हेल्थी और पोषण देता है, इसके साथ ही शरीर को गर्माहट पहुंचता है। बाजरा और मेथी की तासीर गर्म होती है और इसमें कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। बाजरा में फाइबर और आयरन से भरपूर होता है, यह पेट को भी लंबे समय तक भरा रखता है और एनर्जी प्रदान करता है। मेथी पत्ते में एंटी–इन्फ्लेमेटरी, पाचन सुधारने वाले और सर्दी–जुकाम से बचाने वाले गुणों के लिए जानी जाती है। इसलिए नाश्ते में जरुर बनाएं बाजरा–मेथी का चीला। आइए आपको रेसिपी बताते हैं।

सामग्री

– बाजरा का आटा
– मेथी पत्ते (बारीक कटे हुए)
– दही
– अदरक (कद्दूकस किया हुआ)
– हरी मिर्च (बारीक कटी)
– हल्दी
– लाल मिर्च पाउडर
– नमक स्वादानुसार
– जीरा
– तेल/घी

कैसे तैयार करें बैटर

– सबसे पहले आप एक बर्तन में बाजरे का आटा लें। इसमें अब मेथी के पत्ते, अदरक, हरी मिर्च, हल्दी, सास मिर्च, जीरा और नमक मिलाएं।

– इसमें अब आप दही मिला लीजिए। अब थोड़ा–थोड़ा करके पानी डालकर बैटर को पतला कर लें।

– इस बैटर को 10–15 मिनट के लिए ढककर रख दें, जिससे मेथी का फ्लेवर अच्छे से घुल जाए।

चीला सेंकें

– इसके लिए तावा गर्म करें और हल्का सा तेल/घी लगाएं।

– किनारों पर थोड़ा तेल डालें और इसे मीडियम आंच पर पकाएं।

– सुनहरा होने के बाद चीला को पलटें और दूसरी तरफ भी अच्छे से सेंक लें।

– इन स्वादिष्ट चीले को आप दही, चटनी या अचार के साथ खा सकते हैं। यह और भी टेस्टी लगेगा।



संक्षिप्त



ओपनएआई भारतीय शोधकर्ताओं को एक साल तक चैटजीपीटी प्लस देगी मुफ्त

कृत्रिम मेधा (एआई) क्षेत्र की कंपनी ओपनएआई ने मंगलवार को भारत में 'चौटजीपीटी फॉर एकेडमिक रिसर्चर्स' पहल शुरू करने की घोषणा की। इसके तहत चुनिंदा संस्थानों के पात्र शोध संकाय सदस्यों और पोस्ट–डॉक्टोरल शोधकर्ताओं को विज्ञान, गणित और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में 12 महीने के लिए चौटजीपीटी प्लस की सुविधा मुफ्त मिलेगी। अमेरिका कंपनी ने बयान में कहा कि इस पहल के तहत वैश्विक स्तर पर 50,000 नए अनुदान दिए जाएंगे। इसके लिए आवेदन 30 नवंबर से शुरू होंगे और चयन पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर होगा। प्रत्येक अनुदान के तहत शोध कार्य के लिए बनाए गए एक कार्यक्षेत्र में चौटजीपीटी प्लस के तीन उपयोगकर्ताओं को सुविधा मिलेगी। इसमें अनुदान पाने वाले शोधकर्ता के अलावा उनके दो सहयोगी भी शामिल हो सकेंगे। कंपनी ने कहा कि उसका लक्ष्य दुनिया भर में दो लाख तक शोधकर्ताओं को मुफ्त चौटजीपीटी की सुविधा देना है। यह जुलाई में इस प्रायोगिक पहल की शुरुआत के समय घोषित लक्ष्य से दोगुना है। भारत और एशिया प्रशांत क्षेत्र में ओपनएआई के शिक्षा प्रमुख राघव गुप्ता ने कहा कि कुछ महीने पहले प्रायोगिक पहल शुरू होने के बाद से भारतीय संस्थानों ने इस सुविधा में काफी अधिक रुचि दिखाई है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में कंपनी का काम प्रौद्योगिकी तक पहुंच के साथ कौशल विकास, संस्थागत साझेदारी और शोध को जोड़ने पर केंद्रित रहा है। यह पहल भी इसी प्रतिबद्धता का हिस्सा है। कंपनी के मुताबिक, शोधकर्ता चौटजीपीटी का इस्तेमाल वैज्ञानिक शोध सामग्री की समीक्षा करने, परिकल्पनाएं तैयार करने और उनकी जांच करने, आंकड़ों का विश्लेषण करने, शोध संबंधी कोड लिखने और उसकी त्रुटियां दूर करने के साथ ही अनुदान आवेदन तथा शोधपत्रों को तैयार करने में कर सकते हैं। भारत में ओपनएआई इससे पहले भी कई पहल कर चुकी है। इनमें 'ओपनएआई लर्निंग एक्सेलरेटर' शामिल है, जिसका उद्देश्य एआई तक पहुंच, प्रशिक्षण और शोध को बढ़ावा देना है। इस पहल के तहत कंपनी ने आईआईटी मद्रास के साथ शोध सहयोग किया है, जिसके लिए पांच लाख डॉलर की सहायता दी गई है।

आईओसी को पानीपत रिफाइनरी से हरित विमानन ईंधन बेचने की मिली सरकारी मंजूरी

सार्वजनिक क्षेत्र की इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) को उत्तर भारत में अपनी पानीपत रिफाइनरी से सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) की वाणिज्यिक आपूर्ति करने के लिए सरकार की मंजूरी मिल गई है। कंपनी के चेयरमैन ए. एस. साहनी ने मंगलवार को कहा कि इस संयंत्र में इतना ईंधन बनाने की क्षमता है कि 2027 में अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए निर्धारित एक प्रतिशत मिश्रण लक्ष्य को पूरा किया जा सके। साहनी ने यहां उद्योग जगत से जुड़े एक कार्यक्रम में कहा कि भारत के अंतरराष्ट्रीय विमानन के लिए कम कार्बन वाले ईंधन की अनिवार्य जरूरतें लागू करने की तैयारी के अनुरूप आईओसी अतिरिक्त एसएएफ परियोजनाओं में निवेश की प्रतिबद्धता जताने से पहले विमानन कंपनियों के साथ आपूर्ति के लिए समझौते करेगी। इससे उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए मांग आधारित दृष्टिकोण का संकेत मिलता है। साहनी ने कहा कि आईओसी का पानीपत संयंत्र शुरुआती मिश्रण अनिवार्यता को पूरा करने की स्थिति में है। हालांकि, उन्होंने सरकार की मंजूरी के दायरे में आने वाले ईंधन की मात्रा या वाणिज्यिक आपूर्ति शुरू होने की तारीख नहीं बताई। आईओसी के एक अधिकारी ने अगस्त में कहा था कि कंपनी को पानीपत में अपने पहले एसएएफ संयंत्र में दो महीने के भीतर परिचालन शुरू होने की उम्मीद है और वह पांच से छह महीने में दूसरी इकाई में निवेश का फैसला करने की तैयारी कर रही है। पानीपत परियोजना विमानन क्षेत्र में सतत ईंधन के इस्तेमाल की भारत की व्यापक कोशिशों का हिस्सा है। यह क्षेत्र हवाई यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करने के साथ–साथ अपने कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने का प्रयास कर रहा है। भारत का लक्ष्य 2027 से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए आपूर्ति किए जाने वाले ईंधन में एक प्रतिशत सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) मिलाना अनिवार्य करना है। 2028 में यह लक्ष्य बढ़ाकर दो प्रतिशत किया जाएगा। ये लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन की अंतरराष्ट्रीय विमानन के लिए कार्बन क्षतिपूर्ति एवं कटौती योजना के तहत विमानन उत्सर्जन कम करने की वैश्विक कोशिशों के अनुरूप हैं।

देशभर में 10,000 हेक्टेयर पर ग्रीन अमोनिया के ट्रायल, यूरिया से ज्यादा असरदार

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को कहा कि देशभर में 10,000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में ग्रीन अमोनिया के परीक्षण किए जा रहे हैं। इनमें पंजाब का 1,800 हेक्टेयर क्षेत्र भी शामिल है। उन्होंने कहा कि यह यूरिया से कहीं अधिक प्रभावी है। चौहान मोहाली के बदरपुर गांव में एक खेत में ग्रीन अमोनिया का परीक्षण प्रत्यक्ष तौर पर देखने पहुंचे। इस मौके पर पंजाब के कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुड्डियां और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पंजाब इकाई के पूर्व अध्यक्ष सुनील जाखड़ मौजूद रहे। केंद्रीय मंत्री ने यहां पत्रकारों से कहा, ''पंजाब में हम पहले ही 1,015 हेक्टेयर क्षेत्र में परीक्षण कर चुके हैं। संगरूर, बठिंडा, अमृतसर, होशियारपुर, कपूरथला और नवांशहर में भी परीक्षण किए जाएंगे और हम इनके नतीजों का आकलन करेंगे।'' वैज्ञानिकों का हवाला देते हुए चौहान ने कहा कि यूरिया में 46 प्रतिशत नाइट्रोजन होती है, जबकि ग्रीन अमोनिया में इसकी मात्रा करीब 82 प्रतिशत होती है। उन्होंने कहा, ''46 प्रतिशत की तुलना में 82 प्रतिशत का मतलब है कि यह कहीं अधिक प्रभावी है।'' मंत्री ने कहा कि किसान जब यूरिया डालते हैं, तो उसका वास्तविक उपयोग केवल करीब 40 प्रतिशत ही हो पाता है। उन्होंने कहा, ''यह सीधे जड़ों तक पहुंचता है, इसलिए इसका 80 से 90 प्रतिशत तक इस्तेमाल संभव है। इसका मतलब है कि कोई बर्बादी नहीं होगी। आप जितना भी डालेंगे, वह सीधे पौधे तक पहुंचेगा।'' उन्होंने कहा कि देश यूरिया का आयात करता है। आज यूरिया के एक बोरे की कीमत करीब 3,000 रुपये है, जबकि किसानों को यह 1,350 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है।

धोनी ने आईपीएल से भी लिया रिटायरमेंट, सीएसके में संभालेंगे मेंटॉर की नई भूमिका

चेन्नई सुपर किंग्स को पांच आईपीएल खिताब जिताने वाले एमएस धोनी ने खिलाड़ी के रूप में आईपीएल को अलविदा कह दिया है। घुटने की समस्या के चलते उन्होंने फ्रेंचाइजी से खुद को रिलीज़ करने को कहा था। लगभग दो दशकों तक टीम का मुख्य चेहरा रहे धोनी अब 2027 सीज़न से सीएसके में मेंटॉर की नई भूमिका निभाएंगे।

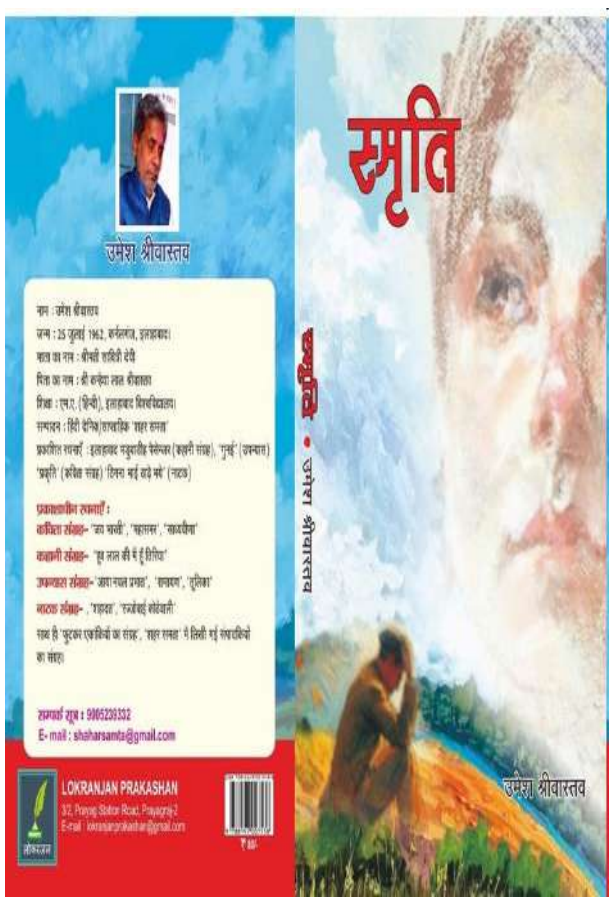
एक ऐसा दौर जो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था, आखिरकार अब समाप्त हो गया है। एमएस धोनी, जिन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स को इंडियन प्रीमियर लीग की सबसे अहम टीमों में से एक बनाया, अब खिलाड़ी के तौर पर पीली जर्सी में मैदान पर नहीं उतरेंगे। इस फ्रेंचाइजी का चेहरा बनने के लगभग दो दशक बाद, भारतीय टीम के पूर्व कप्तान ने अपने CSK करियर को अलविदा कह दिया है। अब 2027 के सीजन से वे टीम में मेंटोर की नई भूमिका निभाएंगे। ज़हीर खान को अपना हेड कोच नियुक्त करने के कुछ हफ्तों बाद, रिटेंशन की समय–सीमा (डेडलाइन) वाले दिन CSK ने एक बड़ा अपडेट दिया। CSK की मालकिन रूपा गुरुनाथ ने बताया कि कुछ महीने पहले ही डै धोनी ने एक खिलाड़ी के तौर पर आगे खेलने को लेकर संदेह जताया था। उन्होंने कहा कि 17 नवंबर की डेडलाइन से पहले, खिलाड़ियों को रिटेन करने पर हुई बातचीत के दौरान धोनी ने फ्रेंचाइजी से उन्हें रिलीज़ करने के लिए कहा था। 45 वर्षीय धोनी घुटने की समस्या से जूझ रहे थे, जिसकी वजह से पिछले प्ल्स सीज़न में उन्हें खेलने के लिए कम समय मिल पाया था। पीली जर्सी उनके जीवन का हिस्सा बनी रहेगी, लेकिन क्रीज़ पर डटे रहकर मैच जिताना, स्टंप्स के पीछे दस्ताने पहनना और ब्ल्ज़ की कमान संभालना – धोनी की ये झलकियाँ अब बस यादों में ही रह जाएंगी। धोनी के अगले अध्याय के लिए इससे बेहतर जगह शायद ही कोई और हो सकती है। चेन्नई सुपर किंग्स और उनके पूर्व कप्तान

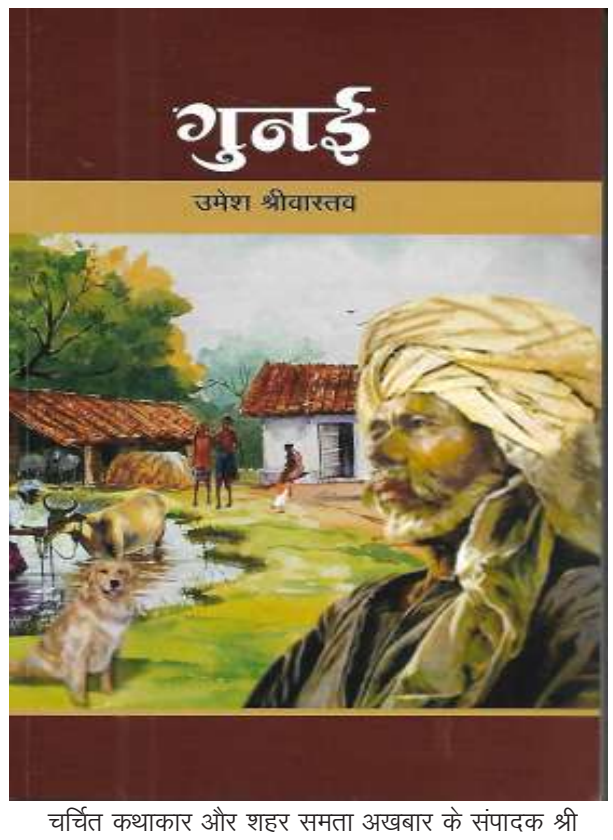


के बीच का रिश्ता क्रिकेट, नतीजों और ट्रॉफियों से कहीं आगे का है। 2008 में प्ल्स के पहले सीज़न से ही, धोनी इस फ्रेंचाइजी की पहचान के केंद्र में रहे हैं। उन्होंने प्रशंसकों का एक ऐसा वफादार समूह तैयार किया है, जिसकी वजह से चेपॉक के दर्शक इस टूर्नामेंट की सबसे जानी–पहचानी पहचान बन गए हैं। चेन्नई सुपर किंग्स के मालिक एन श्रीनिवासन ने एक बयान में कहा एमएस धोनी के बिना सीएसके का कोई अस्तित्व नहीं है। लगभग दो दशकों तक, हम जीत, हार और इन सबके बीच के हर उतार–चढ़ाव में एक–दूसरे के साथ चले हैं और एक साथ आगे बढ़े हैं। श्रीनिवासन ने याद किया कि कैसे उन्होंने 2008 में धोनी को फ्रेंचाइजी में शामिल करने पर जोर दिया था। उन्होंने इसे अपना सबसे बेहतरीन फैसला बतायाकृसिर्फ इसलिए नहीं कि धोनी ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे एक बेहतरीन इंसान हैं। धोनी के आंकड़े कहानी का सिर्फ एक हिस्सा बताते हैं। उन्होंने CSK को 2010, 2011, 2018, 2021 और 2023 में पांच IPL खिताब जिताए, जिससे वे मुंबई इंडियंस के साथ संयुक्त रूप से सबसे सफल चौंपियन बन गए। उन्होंने टीम को 2010 और 2014 में दो चौंपियंस लीग टी20 खिताब भी दिलाए। उनकी कप्तानी में, CSK एक ऐसी टीम बन गई जो लगभग हमेशा खिताबी दौड़ में बनी रहती थी और 10 बार प्ल्स फाइनल तक पहुंची। ये पांच खिताब टीम के सफर के अलग–अलग चरणों में आए। 2016 और 2017 में दो सीज़न के लिए IPL से CSK के सस्पेंड होने का भी उनके जुड़ाव पर कोई खास असर नहीं पड़ा। उस दौरान धोनी राइजिंग पुणे सुपरजायंट के लिए खेले, और फिर 2018 में चेन्नई लौट आए। अपनी वापसी वाले सीज़न में ही उन्होंने CSK को खिताब जिताया, जिससे एक और सफल दौर की शुरुआत हुई।

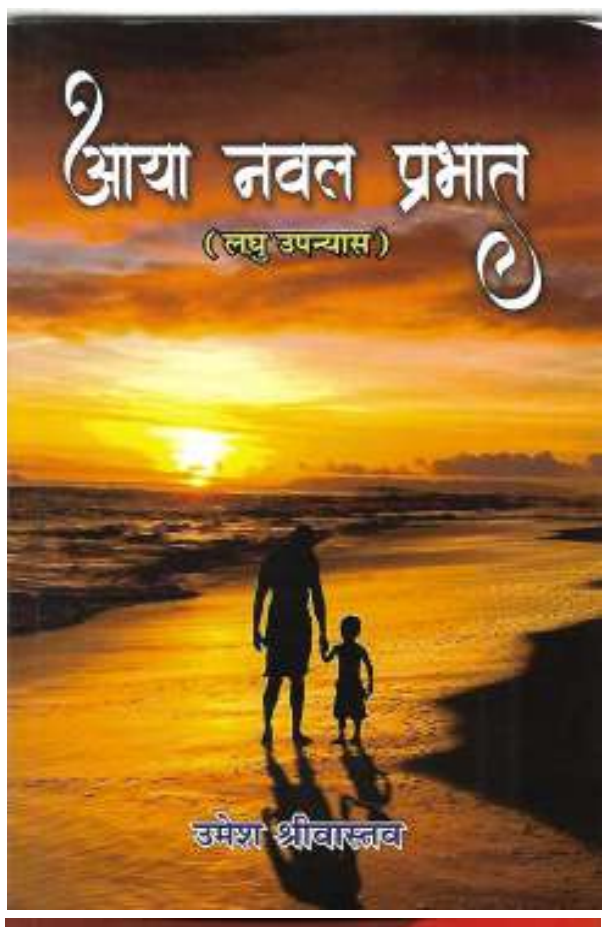
टीम इंडिया की कप्तानी में दबाव नहीं, विराट कोहली से मिलती है प्रेरणा: शुभमन गिल

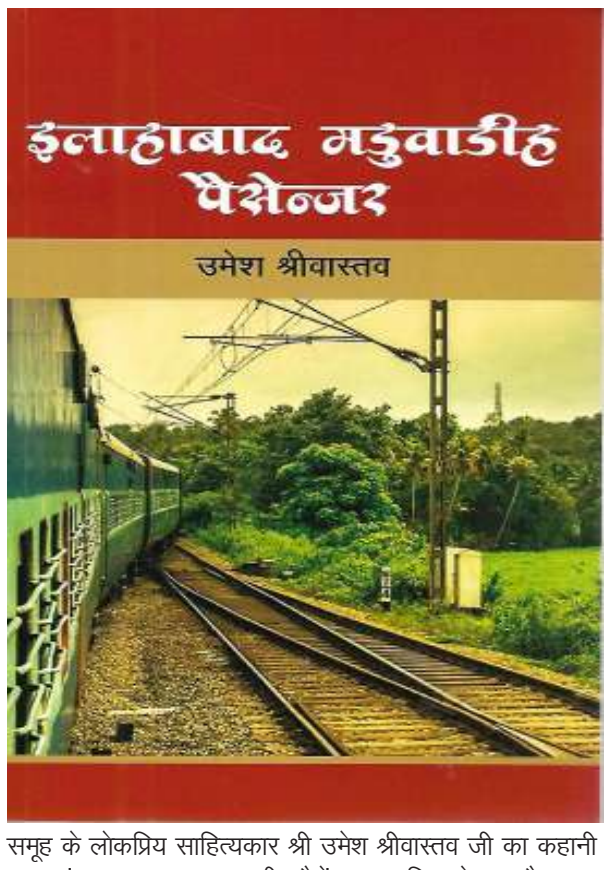
भारतीय क्रिकेट टीम की कप्तानी करना बेहद दबाव वाला काम माना जाता है लेकिन शुभमन गिल ने कहा कि इस भूमिका को निभाते समय वह किसी भी तरह से अपेक्षाओं का बोझ महसूस नहीं करते क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में विराट कोहली जैसे दिग्गजों से प्रेरणा लेते हैं। गिल ने यह बात भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेल संबंधों के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कही। इस कार्यक्रम में न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लैथम भी उपस्थित थे और उन्होंने दोनों देशों के बीच खेल संबंधों और आगामी दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला से संबंधित कुछ सवालों के जवाब दिए। गिल से पूछा गया कि भारत में क्रिकेट की प्रति दीवानगी और उनसे की जा रही अपेक्षाओं को देखते हुए क्या उन्हें भारतीय टीम के कप्तान का पद प्रधानमंत्री जितना चुनौतीपूर्ण लगता है। गिल ने चुटकी लेते हुए कहा, ''कुछ खास नहीं, बस जीतते रहना है।'' उनकी इस बात पर वहां मौजूद सभी लोग हंस पड़े। टेस्ट और वनडे टीम के कप्तान 27 वर्षीय गिल से पूछा गया कि क्या उन्हें अपने से पहले के कप्तानों की विरासत प्रेरणादायक लगती है या फिर उससे कोई दबाव महसूस होता है, उन्होंने कहा, ''मुझे नहीं लगता कि मुझ पर किसी तरह से अपेक्षाओं का कोई बोझ है। पहले के कप्तानों ने हमारा मार्ग प्रशस्त किया और मुझे लगता है कि अब उस रास्ते पर चलने और उनके अनुभवों और सीख को अपनाने की हमारी बारी है।'' उन्होंने कहा, ''हम बहुत भाग्यशाली रहे हैं कि हमारे पास विराट भाई, रोहित (शर्मा) और यहां तक कि गौतम भाई (गौतम गंभीर) जैसे खिलाड़ी हैं, जो बेहद अनुभवी खिलाड़ी हैं। उन्होंने पूरी दुनिया में क्रिकेट खेली है और जबरदस्त सफलता हासिल की है। इसलिए हम उनके अनुभवों को बहुत महत्व देते हैं।'' क्रिकेट के कड़े मुकाबलों को छोड़ दें तो, गिल को न्यूजीलैंड आरामदायक पर्यटन स्थल लगता है, जहां उन्हें कॉफी पीना और टहलने के लिए बाहर जाना अच्छा लगता है। उन्होंने कहा, ''हमारे कई खिलाड़ियों को कॉफी बहुत पसंद है। वे कई कैफे में जाते हैं और वहां उन्हें निश्चित रूप से थोड़ा अधिक सुकून मिलता है। हमें भी थोड़ा आराम करने का समय मिल जाता है जिसमें हम सुकून से टहल सकते हैं तथा खिलाड़ियों और उनके परिवार के साथ कुछ अच्छा समय बिता सकते हैं।'' लैथम ने दोनों देशों के बीच खेल संबंधों के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ''हमने कुछ फुटेज देखे हैं, जिनसे पता चलता है कि पिछले 100 वर्षों में न्यूजीलैंड और भारत के बीच विभिन्न खेलों के जरिए एक बहुत ही खास रिश्ता रहा है। इसलिए 100वें वर्ष में भारत के खिलाफ खेलना हमारे लिए वास्तव में खास है और उम्मीद है कि हम अगले 100 वर्षों में भी इसे जारी रखेंगे।''



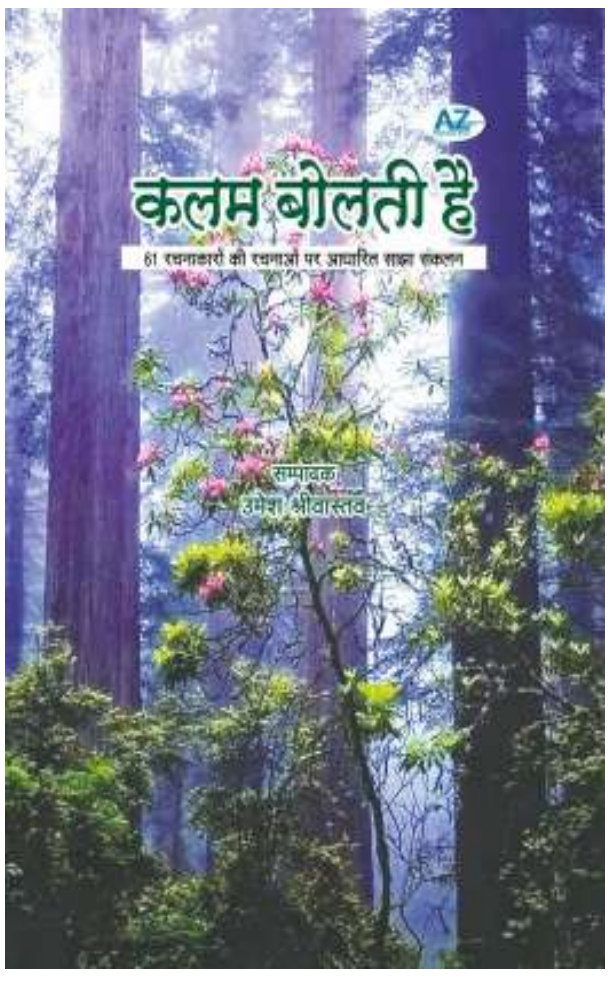


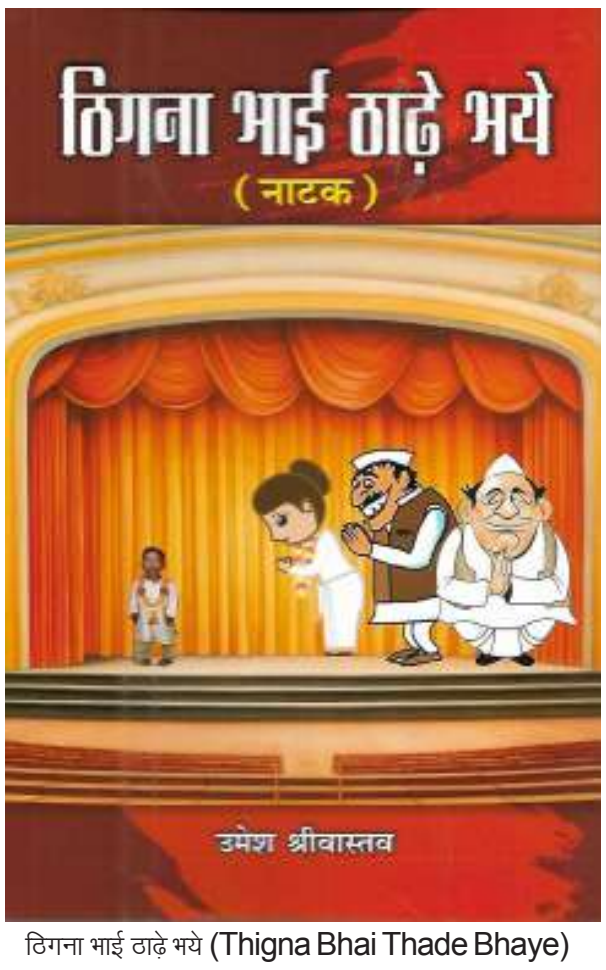
चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित





समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।





ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

चिन्मय कृष्ण दास को कड़ी सुरक्षा में चटगांव से ढाका की विशेष जेल भेजा गया

बांग्लादेश में हिंदू अधिकार नेता चिन्मय कृष्ण दास को कड़ी सुरक्षा के बीच चटगांव केंद्रीय जेल से ढाका की एक विशेष जेल स्थानांतरित किया गया है। मीडिया की खबरों में यह जानकारी दी गई। 'सम्मिलित सनातन जागरण जोत' नामक संगठन के प्रवक्ता दास को बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज के अपमान के आरोप में नवंबर 2024 में गिरफ्तार किया गया था। उनकी गिरफ्तारी के बाद देश के विभिन्न हिस्सों में विरोध प्रदर्शन हुए और सांप्रदायिक तनाव की स्थिति पैदा हो गई थी। समाचार पत्र 'द ढाका ट्रिब्यून' की खबर के अनुसार, पुलिस अधिकारियों ने इस स्थानांतरण के पीछे कोई विशेष कारण नहीं बताया है। दास को सोमवार तड़के विशेष जेल स्थानांतरित किया गया। चटगांव केंद्रीय जेल के अधीक्षक मोहम्मद इकबाल हुसैन के हवाले से खबर में बताया गया, ''चिन्मय कृष्ण दास को ढाका के केरानीगंज स्थित विशेष कारागार स्थानांतरित किया गया है।'' वहीं, 'द डेली स्टार' की खबर के मुताबिक, दास को सोमवार तड़के करीब पांच बजे चटगांव से ढाका ले जाया गया। उनका वाहन पूर्वाह्न करीब 10 बजे ढाका केंद्रीय जेल पहुंचा। हुसैन ने कहा कि दास को स्थानांतरित करने के पीछे कोई विशेष वजह नहीं है। कैदियों को एक जेल से दूसरी जेल भेजना कारागार प्रशासन की नियमित प्रक्रिया का हिस्सा है। अखबार ने जेल सूत्रों के हवाले से बताया कि चिन्मय दास के लिए भोजन तैयार करने वाले रंगनाथ दास ब्रह्मचारी को उनके साथ ढाका स्थानांतरित नहीं किया गया है। वह अब भी चटगांव केंद्रीय जेल में ही हैं। नवंबर 2024 में गिरफ्तारी के बाद दास के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास और तोड़फोड़ समेत कई आरोपों में मामले दर्ज किए गए थे। उनके खिलाफ कुल छह आपराधिक मामले दर्ज हैं। उच्च न्यायालय अब तक इनमें से चार मामलों में उन्हें जमानत दे चुका है। हालांकि, शेष मामलों में कार्यवाही लंबित होने के कारण उनकी तत्काल रिहाई के आसार नहीं हैं। राजद्रोह के मामले में उनकी जमानत पर अब भी रोक लगी हुई है। वहीं, हत्या के एक मामले की सुनवाई चटगांव के त्वरित सुनवाई न्यायाधिकरण में जारी है। हत्या का यह मामला उस घटना से जुड़ा है, जिसमें चटगांव में दास की गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं ने एक सरकारी अभियोजक की धारदार हथियार से हत्या कर दी थी। दास पहले अंतरराष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) से जुड़े हुए थे। वह जिस 'सम्मिलित सनातन जागरण जोत' संगठन से जुड़े हैं, उसने वर्ष 2024 में छात्र नीत हिंसक प्रदर्शनों के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना के सत्ता से हटने के उपरांत देश में फैली अशांति के बीच अल्पसंख्यकों की सुरक्षा, संरक्षा और उनके अधिकारों की मांग को लेकर कई रैलियां आयोजित की थीं।

अब हूतियों का बाब अल मंदेब पर कब्जा! बौखलाया सऊदी, मिलिट्री कमांडर को हटाया

यमन के हूती विद्रोहियों ने एक बार फिर सऊदी को ऐसी मार दी कि उसे बाब अल मंदेब से भी दुम दबाकर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा और इसी के साथ हूं विद्रोहियों ने अब बाब अल मंदेब पर भी पूरी तरह से कब्जा कर लिया है क्योंकि यहां सऊदी समर्थित यमन की सेना पीछे हट चुकी है। खतरे को भांपते हुए यमनी सेना ने मौका रहते पीछे हटना ही उचित समझा और फिर हूतियों ने इस पर कब्जा कर लिया। यमन में हुती विद्रोहियों और सऊदी अरब समर्थित सरकारी सेना के बीच लड़ाई एक बार फिर तेज हो चुकी है। 15 नवंबर को यमन की अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सरकार के समर्थन में लड़ रही



दक्षिणी सेनाओं ने ऐलान किया कि वह बाब अल मंदेब स्टेट के पास धुबा और आसपास के इलाकों से अपनी सेना को दूसरी जगह तैनात कर रही है। सरकारी सेना ने इसे पीछे हटना नहीं बल्कि रणनीतिक पन्नतैनाती बताया है। उसका कहना है कि अब प्राथमिकता यमन की अंतरिम राजधानी अदन की सुरक्षा करना, लाहिज के मोर्चे मजबूत करना और ताईज शहर की घेराबंदी खत्म करने की कोशिश करना है। लेकिन कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि हूतियों के डर की वजह से सऊदी को यह कदम उठाना पड़ा और बाब अल मंडेब से पूरी तरह से पीछे हटना पड़ा। इतना ही नहीं अपने मिलिट्री कमांडर को भी हटाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस सैन्य झटके के बाद सऊदी अरब ने बड़ा फैसला लेते हुए हूतियों के खिलाफ गठबंधन सेना की कमान संभाल रहे लेफ्टिनेंट जनरल फहद बिन हमद अल सलमान को पद से हटा दिया है। उनकी जगह अब जनरल फयाद अल रुवेली को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस फैसले का सीधा फायदा भूतियों को मिला है। सरकारी सेना के पीछे हटने के बाद होती लड़ाकों ने उन इलाकों में अपनी मौजूदगी बढ़ा दी है। जहां से बाब अल मंदेब और लाल सागर के समुद्री रास्तों पर नजर रखी जा सकती है।

नेतन्याहू का प्लान फेल! अरब नेता बन गया डिप्टी स्पीकर, इजरायल में बन गया नया इतिहास

इज़राइल की राजनीति से आई एक बड़ी खबर ने कार्यवाहक प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और उनकी खेमे की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। अल जज़ीरा की रिपोर्ट के मुताबिक इज़राइली संसद यानी नेसेट के एक अरब सदस्य और जॉइंट लिस्ट गठबंधन के अध्यक्ष अहमद तिबी को संसद का डिप्टी स्पीकर चुन लिया गया। नेसेट के सदस्यों द्वारा चुने जाने के बाद अहमद तिबी ने अल जज़ीरा से बातचीत में इसे 27 अक्टूबर के चुनाव में 11 सीटें जीतने वाले अपने गठबंधन की एक वाजिब उपलब्धि बताया। तिबी ने आरोप लगाया कि बेंजामिन नेतन्याहू की लिकुड पार्टी और राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन ग्विर ने उनके चुनाव को रोकने की पूरी कोशिशें की थीं। लेकिन तमाम भड़काऊ बयानों के बावजूद वे नाकाम ही रहे। उन्होंने साफ शब्दों में कहा, अब संसद की सभी समितियों में



जॉइंट लिस्ट का प्रतिनिधित्व होगा। पिछले महीने हुए आम चुनाव में इज़राइल के फिलिस्तीनी नागरिकों का प्रतिनिधित्व करने वाले दो प्रमुख गुटों जॉइंट लिस्ट और यूनाइटेड अरब लिस्ट यानी राम ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए 120 सदस्य संसद में कुल 19 सीटों पर जीत दर्ज की। राष्ट्रपति इसाक हरज़ोग द्वारा इस महीने अगली सरकार बनाने की जिम्मेदारी सौंपी जाने के बाद इन अरब दलों ने विपक्षी नेता गादी आइजनकोट को अपना समर्थन दिया। हमद तिबी के मुताबिक अब इन दलों का मुख्य ध्यान अपनी बढ़ी हुई संसदीय ताकत का इस्तेमाल कर अपने समुदाय के साथ होने वाले भेदभाव और अन्य बुनियादी मुद्दों को हल करने पर है। डिप्टी स्पीकर चुने जाने से ठीक एक दिन पहले रविवार को अहमद तिबी ने बेंजामिन नेतन्याहू और उनके सहयोगियों के खिलाफ आपराधिक जांच की मांग करके सियासी हलचल और तेज़ कर दी। इज़राइल के चौनल 12 की एक खोजी रिपोर्ट का हवाला देते हुए तिबी ने नेतन्याहू और उनके करीबियों पर माफिया शैली में काम करने का आरोप लगाया। चौनल 12 की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि नेतन्याहू के चीफ ऑफ स्टाफ ईदो नार्डेन ने चुनाव से पहले पुलिस कमिश्नर के दफ्तर से संपर्क कर यह आरोप लगाया था कि दक्षिणी इज़राइल में राम पार्टी के तीन कार्यकर्ता मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए भारी मात्रा में नकदी और वाउचर जा रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक प्रधानमंत्री कार्यालय के एक पूर्व कर्मचारी की सूचना पर भरोसा करते हुए पुलिस ने बिना वैध सर्च या गिरफ्तारी वारंट के उन कार्यकर्ताओं के घरों पर छापेमारी कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस मामले पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर प्रतिक्रिया देते हुए टीवी ने लिखा कि कानून से ऊपर कोई नहीं है। यहां तक कि नेतन्याहू भी नहीं। गौरतलब है कि अहमद तिबी ता अल पार्टी के नेता हैं जो जॉइंट लिस्ट का एक हिस्सा है। वे पहली बार 1999 में नेसेट के लिए चुने गए थे और इससे पहले 2006 से 2022 तक भी संसद के डेप्युटी स्पीकर रह चुके हैं। इजराइली संसद के इतिहास में कई अरब नेता इस पद पर रह चुके हैं। इनमें 1988 में नेसेट में नियुक्त होने वाले पहले मुस्लिम नवाफ मसाल्ला, 2003 में नियुक्त हदाश पार्टी के पूर्व नेता मोहम्मद बाराके, राम के पूर्व सांसद अब्दुल मलिक देहमशी और 2020 से 2022 के बीच डेप्युटी स्पीकर रहे राम के नेता मंसूर अब्बास शामिल हैं। एक तरफ संसद की सभी समितियों में अरब दलों की मजबूत भागीदारी और दूसरी तरफ चुनावी हस्तक्षेप के आरोपों पर आपराधिक जांच की बढ़ती मांग। इजराइल की मौजूदा सियासत में यह घटनाक्रम कार्यवाहक सरकार और बेंजामिन नेतन्याहू के लिए एक बड़ी राजनीतिक चुनौती बनकर उभरा है।

दी जा रही हैं तड़पाने वाली यातनाएं, पाकिस्तान की जेल से इमरान खान की डराने वाली चिट्ठी

पाकिस्तान के अडियाला जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने वहां की शीर्ष अदालतों के मुख्य न्यायाधीशों को खुला पत्र लिख दिया है। खुद और पत्नी बुशरा बीवी के तत्काल इलाज के लिए इसके जरिए मदद मांगी गई है। इमरान ने दावा किया कि उनकी सेहत लगातार बिगड़ रही है और जेल में एकांत कारावास के कारण उनकी जान को खतरा है। उन्होंने भावुक अपील करते हुए कहा है कि वे शायद जिंदा ना लौटे। यह पत्र इमरान के वकील बैरिस्टर सलमान सबदर ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर साझा किया है। सबदर ने बताया कि 11 नवंबर को अदियाला जेल में इमरान से मुलाकात के दौरान उन्होंने यह पत्र न्यायाधीशों तक पहुंचाने का निर्देश दिया था। इमरान ने पत्र में कहा कि वह एकांत कारावास में हैं और अब यही उनकी आवाज जेल की दीवारों से बाहर पहुंचाने का



एकमात्र रास्ता बचा है। खान ने अपने पत्र में लिखा है कि डॉक्टरों ने उन्हें बताया है कि उन्हें ब्रेन हैमरेज और कार्डियक अरेस्ट का बहुत अधिक खतरा है, और उनके दिल को पहले ही नुकसान पहुँच चुका है। उन्होंने बुशरा बीबी को लेकर भी चिंता जताई। उनके अनुसार, अप्रैल में बुशरा बीबी की आँख का रेटिना अलग (डिटैच) हो गया था, जिसकी गुप्त रूप से सर्जरी की गई थी। खान ने कहा कि उन्हें डर है कि अगर और सर्जरी नहीं हुई, तो बुशरा बीबी अपनी आँखों की रोशनी खो सकती हैं। उन्होंने लिखा मैंने अनगिनत मामलों में बेहद मुश्किल कानूनी लड़ाइयाँ लड़ी हैं, और मैं रुका नहीं हूँ। लेकिन सिस्टम ने मुझे न्याय देना बंद कर दिया है। उन्होंने बताया कि उन्हें दिन में 22 घंटे तक अकेले (एकांत कारावास में) रखा जा रहा है, जहाँ न तो उनके परिवार वालों को उनसे मिलने दिया जाता है और न ही उन्हें किताबें या टीवी देखने की सुविधा दी जाती है। उन्होंने कहा कि इसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है। उन्होंने यह भी दावा किया कि पिछले एक साल में वे अपने वकीलों से केवल चार बार ही मिल पाए हैं। उन्होंने लिखा, मैं अपनी बेगुनाही तभी साबित कर पाऊंगा, जब मैं जिंदा रहूंगा। पाकिस्तान के संसदीय मामलों के मंत्री तारिक फजल चौधरी ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि खान को जेल में ष्सभी सुविधाएं दी जा रही हैं, जिसमें उनकी पसंद का खाना भी शामिल है। मंत्री ने पत्रकारों से कहा फिलहाल, पाकिस्तान की जेलों में खान को सबसे अच्छी सुविधाएं मिल रही हैं। अधिकारियों का यह भी कहना है कि एक हफ्ते पहले खान को आंखों के इंजेक्शन के लिए सरकारी अस्पताल ले जाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें क्लिनिकली स्टेबल (स्वास्थ्य की दृष्टि से स्थिर) बताया। खान, जो पहले पाकिस्तान की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के कप्तान रह चुके हैं, 2018 से 2022 तक पाकिस्तान के प्रधानमंत्री भी रहे।



एनवीडिया में गहराया संकट! डोनाल्ड ट्रम्प-एलन मस्क के समर्थन के बाद भी क्यों नहीं हो पा रही जेन्सेन हुआंग की वापसी?

दुनिया की सबसे मूल्यवान और प्रमुख चिप निर्माता कंपनी एनवीडिया में नेतृत्व को लेकर चल रहा संकट और अधिक गहराता जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और टेक दिग्गज एलन मस्क सहित सिलिकॉन वैली के कई प्रभावशाली अधिकारियों के खुले समर्थन के बावजूद, एनवीडिया के निदेशक मंडल (बोर्ड) ने कंपनी के सह-संस्थापक और पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेन्सेन हुआंग को दोबारा CEO पद पर बहाल करने की किसी भी संभावना को सिरे से खारिज कर दिया है। इस मामले की सीधी जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने श्फॉक्स न्यूज़श को बताया कि बोर्ड का पूर्व CEO को फिर से बहाल करने का कोई इरादा नहीं है। यह घटनाक्रम उन खबरों के बीच सामने आया है, जिनमें कहा गया है कि 12 नवंबर को इस्तीफा देने के बाद, हुआंग ने अपने करीबी सहयोगियों के साथ कंपनी के नेतृत्व में वापसी की संभावना पर चर्चा की थी। फाइनेंशियल टाइम्स के अनुसार, कंपनी के अंदर और बाहर उनके कथित संबंधों को लेकर चल रहे विवाद के बीच, कई प्रमुख टेक्नोलॉजी अधिकारी उनकी वापसी के लिए समर्थन जुटा रहे हैं। मामले से जुड़े कई लोगों का हवाला देते हुए, फाइनेंशियल टाइम्स ने बताया कि जब एनवीडिया बोर्ड उनके इस्तीफे से जुड़ी परिस्थितियों की स्वतंत्र जांच कर रहा था, तब हुआंग ने अपने करीबी लोगों के साथ वापसी की संभावना पर बातचीत की थी।

हुआंग के एक सहयोगी ने बताया कि उन्हें फिर से बहाल करने के लिए प्रभावशाली टेक्नोलॉजी अधिकारियों को एकजुट करने की कोशिशें चल रही हैं, जिसमें व्हाइट हाउस से समर्थन मांगना भी शामिल है। फाइनेंशियल टाइम्स ने इस सहयोगी के हवाले से कहा, फ्रंटियर लैब्स के बाहर टेक जगत के सभी अहम लोग जेन्सेन को पसंद करते हैं।

साथ ही यह भी बताया गया कि इस अभियान को खुद हुआंग का भी समर्थन हासिल है। यह अभियान अब जोर पकड़ चुका है। एलन मस्क सहित कई प्रमुख टेक्नोलॉजी अधिकारियों और बड़े शेयरधारकों ने एक खुले पत्र का समर्थन किया है, जिसमें एनवीडिया बोर्ड से हुआंग को फिर से बहाल करने की मांग की गई है। खबरों के अनुसार, कई कर्मचारियों ने भी सार्वजनिक रूप से उनकी वापसी का समर्थन किया है और इस पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने संकेत दिया है कि वे एनवीडिया के ब्द के रूप में जेन्सेन हुआंग की वापसी का स्वागत करेंगे। उन्होंने कहा कि उन्हें उनकी बहाली से कोई दिक्कत नहीं हैष और सुझाव दिया कि कंपनी के सह-संस्थापक ने एक बड़ा सबक सीख लिया है।

काबुल में पाबंदियों के बीच गुप्त तरीके से स्कूल और कारोबार चला रहीं अफगान महिलाएं

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में महिलाएं तालिबान के कड़े प्रतिबंधों को चुपचाप चुनौती दे रही हैं। कोई महिला गुप्त रूप से स्कूल चला रही है तो कोई प्रतिबंधों के बावजूद ब्यूटी सैलून और छोटे कारोबार के जरिए अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही है। अगस्त 2021 में अमेरिका के नेतृत्व वाली सेनाओं के वापस चले जाने के बाद तालिबान के सत्ता में आने के साथ ही महिलाओं पर कई तरह की पाबंदियां लगा दी गई थीं। उनके लिए प्राथमिक शिक्षा से आगे पढ़ाई पर रोक है। हालांकि, उन्हें इस्लामी धार्मिक शिक्षा और भाषा पाठ्यक्रमों में शामिल होने की अनुमति है। पार्क और जिम में उनके जाने पर प्रतिबंध है, ब्यूटी सैलून बंद करा दिए गए हैं और सिर से पैर तक शरीर ढकने के सख्त नियम लागू हैं। महिलाओं को कुछ कारोबार के लिए लाइसेंस मिल सकता है, लेकिन अधिकतर नौकरियों में उनके काम करने पर रोक है। एक पूर्व महिला फुटबॉल खिलाड़ी ने कहा, अफगानिस्तान में महिला होना ही एक अपराध बन गया है। इन प्रतिबंधों को सदाचार के प्रचार और बुराई की रोकथाम संबंधी मंत्रालय की नैतिकता पुलिस लागू कराती है। इस पुलिस के अधिकारियों को लेकर महिलाओं में काफी भय है। वे सफेद कोट पहनकर सड़कों पर गश्त करते हैं और नियमों का उल्लंघन करने वाली महिलाओं को हिरासत में ले सकते हैं। कुछ महिलाओं की पिटाई भी की गई है। महिलाओं पर पाबंदियों से जुड़े सवालों के जवाब में मंत्रालय के प्रवक्ता मोहम्मद असलम बदरीवाल ने 'एसोसिएटेड प्रेस' से कहा कि मंत्रालय इस्लामी शरीयत के तहत सभी के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, हमारी बहनें भी अपने सामाजिक और व्यावसायिक कार्य कर सकती हैं, बशर्ते वे इस्लामी शरीयत के सिद्धांतों और वर्तमान में लागू कानूनों का सख्ती से पालन करें। उन्होंने कहा कि मंत्रालय की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएं समाज में पूरी तरह सुरक्षित रहें और शरीयत के तहत मिले सभी अधिकारों का लाभ उठा सकें। हालांकि, इन प्रतिबंधों और गिरफ्तारी के जोखिम के बावजूद कुछ महिलाओं ने अपने तरीके से इनका विरोध करने का रास्ता खोज लिया है। ऐसी ही तीन महिलाओं की कहानी सामने आई है, जो काबुल में गुप्त रूप से अपना काम जारी रखे हुए हैं। गिरफ्तारी के डर से इन तीनों ने अपनी पहचान उजागर नहीं करने की शर्त पर बात की। कई वर्षों तक काबुल के एक ब्यूटी सैलून में काम कर चुकी 40 वर्षीय एक महिला को, अधिकारियों द्वारा सैलून बंद कराए जाने के बाद लगा कि उसकी जिंदगी थम गई है। उसने कहा, पूरी तरह निराशा महसूस होती है। अफगानिस्तान में खुशी या सुकून देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। न यात्रा की आजादी है, न पार्क, न स्कूल। कुछ भी नहीं है। अब वे हमें काम भी नहीं करने देना चाहते। ऐसा लगता है कि अफगानिस्तान में महिलाओं के लिए काम करना भी अपराध बन गया है। ब्यूटी सैलून पर प्रतिबंध के बावजूद उसने अपना सैलून खोलने का फैसला किया। खासकर शादियों के दौरान इसकी काफी मांग थी, क्योंकि इन मौकों पर महिलाओं के लिए आकर्षक हेयर स्टाइल और मेकअप कराना आम बात है। उसने एक अपार्टमेंट किराये पर लेकर जरूरी उपकरण खरीदे। जल्द ही उसके पास करीब 30 ग्राहक आने लगीं। उसके पति समेत लाखों अफगान पुरुष बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, ऐसे में यह सैलून परिवार के लिए आर्थिक सहारा बन गया लेकिन अधिकारियों को उसके गुप्त सैलून की जानकारी मिल गई। छापेमारी के दौरान वे लगभग सभी उपकरण और फर्नीचर ले गए। महिला ने कहा, मैं पूरी तरह टूट गई थी। अगर मेरा काम, जो मुझे जिंदगी में मकसद देता था, छिन जाता है तो मेरे पास क्या बचेगा? मैं अपने बच्चों को कैसे खिलाऊंगी और घर का खर्च कैसे चलाऊंगी? मैं पूरी तरह निराश हो गई थी और मैंने देश छोड़ने के बारे में सोचा। हालांकि, ग्राहकों के लगातार फोन आने और आर्थिक जरूरतों के चलते उसने दोबारा कोशिश करने का फैसला किया। उसने एक अन्य अपार्टमेंट किराये पर लिया और फिर से सैलून शुरू कर दिया। अब उसके यहां सात महिलाएं काम करती हैं, जो अपने परिवारों का खर्च उठाने में मदद कर रही हैं। एक अन्य महिला के लिए किशोरावस्था से ही फुटबॉल उसकी जिंदगी और सपनों का केंद्र रहा था। उसे अफगानिस्तान की राष्ट्रीय टीम के लिए भी चुना गया था लेकिन दो साल बाद महिलाओं के खेलों पर प्रतिबंध ने उसके सपनों को तोड़ दिया। वह अवसाद में चली गई और करीब छह महीने तक अपने कमरे से बहुत कम बाहर निकली। परिवार उसकी हालत को लेकर चिंतित था। आखिरकार उसने दोबारा खेलना शुरू किया, लेकिन मैदान पर नहीं, बल्कि अपने घर के सीमित स्थान में। उसने मुक्केबाजी भी शुरू की और पुरानी कारों के टायरों को जोड़कर पंचिंग बैग बना लिया।



प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।